संसाधन पुस्तक

भारत की सांस्कृतिक धरोहर

भाग-1

बदलाव की लहर

थीम 3 पर्यावरण, संस्कृति एवं धरोहर

लेखक: ब्रजेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

संसाधन पुस्तक

भारत की सांस्कृतिक धरोहर

भाग–1

बदलाव की लहर

थीम 3 पर्यावरण, संस्कृति एवं धरोहर

लेखक: ब्रजेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

प्रकाशक की तरफ से

श्री ब्रजेन्द्र कुमार श्रीवास्तव हमेशा से एक उत्साहक पर्यटक रहे हैं। उन्होनें देश और विदेश के भिन्न–भिन्न स्थानों का भ्रमण किया है।

आज 77 वर्ष की उम्र में भी वो क्रियाशील हैं। एक अत्यन्त ही सरल भाषा में उन्होंने भारतीय स्कूली बच्चों को अपनी विरासत एवं सांस्कृ. तिक धरोहर से अवगत कराने के लिए पांच खण्ड़ों में एक वृहत पुस्. तक लिखी है। जिसका पहला खण्ड आप सभी के सामने प्रस्तुत है।

हमें पूरी उम्मीद है कि यह पुस्तक हमारे युवा छात्रों के लिए भ्रमण मार्गदर्शिका के रूप में पसन्द आएगी।

विषय सूची

उत्तराखंड	1
पश्चिम बंगाल	35
महाराष्ट्र	43
कर्नाटक	53

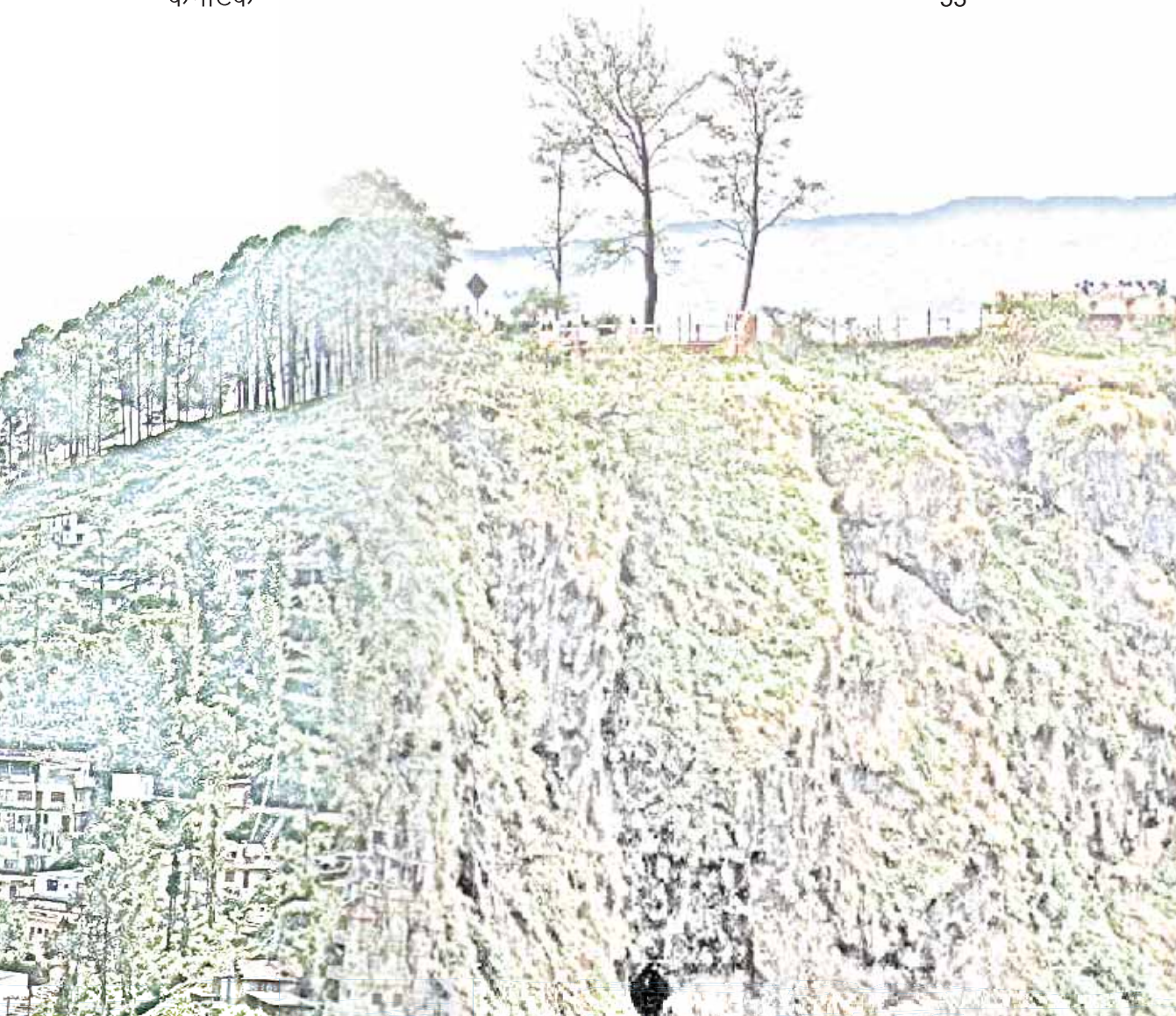

उत्तरांचल

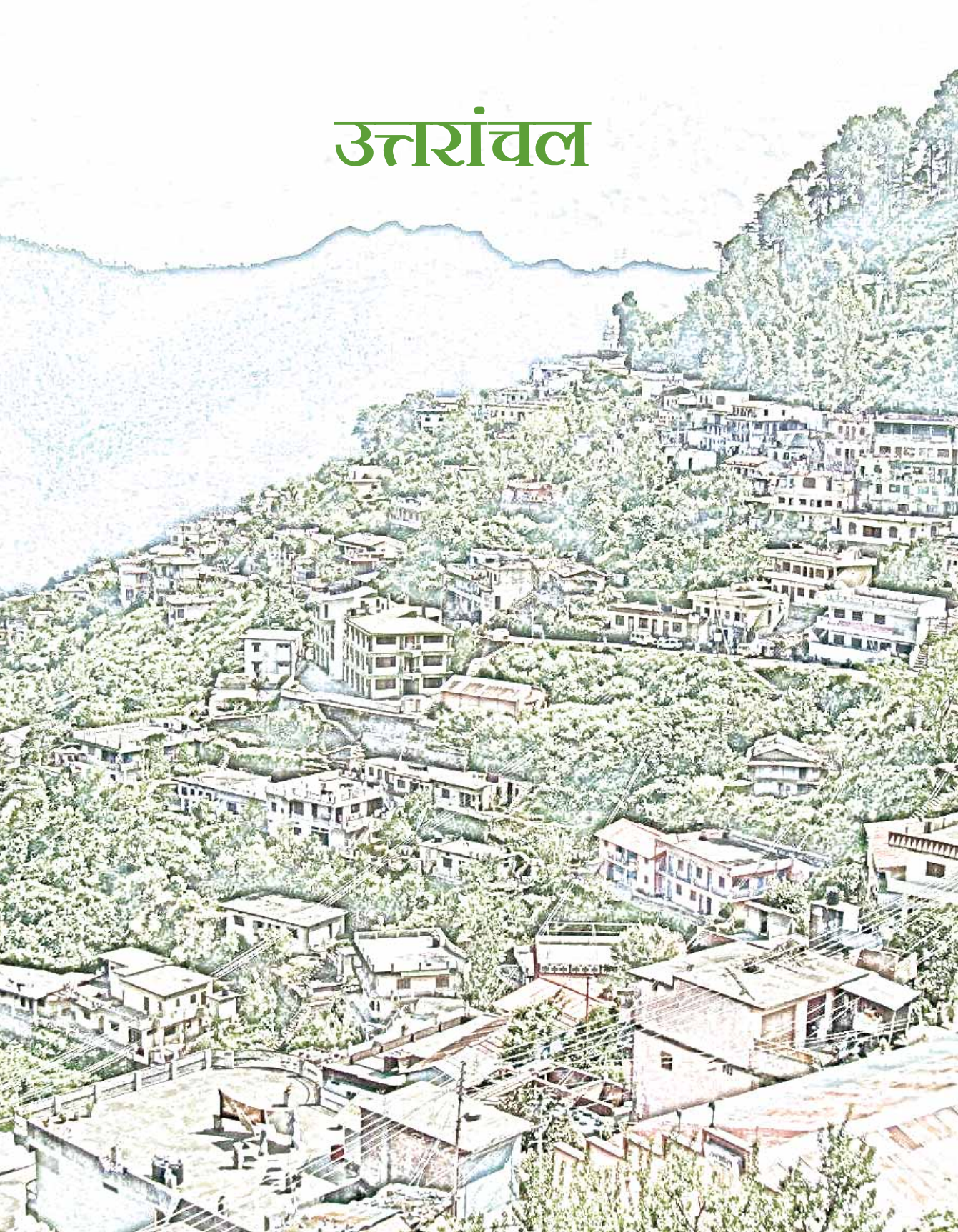

उत्तरांचल

उत्तरांचल की पवित्र तपोभूमि में देश की सर्वप्रसिद्ध नदियाँ गंगा व जमुना, अनेकों प्रसिद्ध मन्दिर व पवित्र स्थल इत्यादि हैं। ऐसी पुण्यभूमि भारत में अन्यत्र कहीं नहीं है। सदियों से यह तपस्वी, ऋषि मुनियों की साधना स्थली रही है। इसकी उपमा स्वर्ग से दी जाती है। यह पूरा क्षेत्र ही महिमामय है।

हरिद्वार

हरिद्वार वह स्थान है जहाँ गंगा नदी हिमालय के पहाड़ी क्षेत्र को छोड़ भारत के मैदान में प्रवेश करती है। यह दिल्ली से 202 किलोमीटर दूर है तथा भारत के सभी भागों से रेल सड़क व हवाई यातायात से जुड़ी है। इसे गंगाद्वार के नाम से भी जाना जाता है। हरिद्वार विशेष धार्मिक आकर्षण रखती है। यही बदरीनाथ, केदार नाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, फूलों की घाटी का प्रवेशद्वार है। अतः देश के कोने कोने से लाखों यात्री धार्मिक व पर्यटन की भावना से यहां आते हैं। हरिद्वार भी काशी की भाँति मन्दिरों का शहर है। इसकी विशेषता है कि यह चारों ओर से हरी भरी पहाड़ियों से घिरी एक प्राकृतिक सौंदर्य वाली नगरी है। पूरा उत्तराखण्ड ही तपस्वी, ऋषि मुनियों का साधना स्थल है। अतः इसकी उपमा स्वर्ग से की जाती है।

दर्शनीय स्थल

1. **हर की पैड़ी** – हर की पैड़ी पर गंगा नदी लाई गई है। कहा जाता है कि इसी स्थल पर राजा खेत की तपस्या से प्रसन्न हो कर ब्रम्हा जी ने वर दिया कि वे इस स्थान पर विष्णु व शिव के साथ निवास करें। तभी से वह स्थल ब्रम्हपुरी और साथ का कुण्ड ब्रम्हकुंड कहलाता है। संध्या समय प्रतिदिन यहाँ गंगा की आरती के समय लाखों दीप जला कर गंगा में प्रवाहित करते हैं। तैरते हुये लाखों दीपकों का प्रकाश पूरे गंगा को आलोकित करते हुये अद्भुत दिखता है।

2. **चंडी देवी का मन्दिर** – हर की पैड़ी से 3 किलोमीटर दूर शिवालिक के नील पर्वत पर स्थित है। यहां रोपवे की सुविधा है। इसी पर्वत पर नीलेश्वर महादेव व काली का मन्दिर है।

3. **ब्युटी प्वाइंट** – मनसा देवी मार्ग पर 2 किलोमीटर दूर यह एक खूबसूरत स्थल है जहाँ से हरिद्वार व निकटवर्ती स्थानों के दृश्य देख सकते हैं।

4. **मनसादेवी** – माँ दुर्गा का प्रतिरूप मनसा देवी का मन्दिर शिवालिक पर्वत के एक शिखर पर है। यहाँ यात्री पैदल या रोपवे से पहुँच सकते हैं। गंगा तट से भी यह मन्दिर दिखता है। मन्दिर में देवी की प्रतिमा तीन सिर और पाँच भुजा वाली है।

5. **माया देवी मन्दिर** – हरिद्वार का पुराना नाम मायापुरी था। माया देवी का भव्य मन्दिर तैमूर लंग के आक्रमण से नष्ट हो गया। उसी तोड़ फोड़ में देवी की काली संगमरमर की मूर्ति में दरार आ गयी।

6. **भीम गोड़ा** – हर की पैड़ी से 1 किलोमीटर दूर इस स्थान पर एक कुन्ड है। कहा जाता है कि भीम ने धरती पर पैर पटक कर धरती चीर कर पानी निकाला था। इस कुंड को भीमकुन्ड कहते हैं। यहाँ एक मन्दिर भी है।

7. **सप्तधारा व सप्तऋशि आश्रम** – भीमगोड़ा से 4 किलोमीटर दूर एक पवित्र स्थल है जहाँ सात ऋषियों कश्यप, भारद्वाज, अत्रि, गौतम, जमदग्नि, विश्वामित्र व वशिष्ठ ने तप किया था इन्ही के कारण गंगा यहाँ सात धाराओं में बहती है। इस स्थल पर वर्तमान में सप्तऋषि आश्रम है जिसमें भगवान शंकर का मन्दिर है। समीप ही सात कुटियाएं भी हैं।

8. **दक्ष प्रजापति मन्दिर व सती कुंड** – हरिद्वार स्टेशन से 3 किलोमीटर दूर कनखल में प्रजापति दक्ष का प्राचीन मन्दिर है। यहाँ एक कुंड भी है, जिसे सती कुंड कहते हैं। करखल में ही गंगा की नहर गंगा नदी में मिल जाती है।

9. **पारद शिवलिंग** – कनखल में ही एक शिवलिंग शुद्ध पारे का है। इस मन्दिर के प्रांगण में रुद्राक्ष का पेड़ भी है।

10. **कुशार्वत घाट** – इस घाट पर श्राद्ध करते हैं। यहाँ मुनि दत्तात्रेय ने तपस्या भी की।

11. **गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय** – हरिद्वार से 5 किलोमीटर दूर आर्य समाज के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित प्रसिद्ध गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय है।

12. **भारतमाता मन्दिर** – शहर से 7 किलोमीटर दूर भारतमाता मन्दिर है जो आठ मंजिला है। यह कई धर्मों का आस्था स्थल है। यहाँ विभिन्न धर्मों के साधु संतों एवं देश की प्रमुख हस्तियों के सुन्दर एवं आकर्षक मूर्तियाँ हैं।

13. **दिव्य योग आश्रम** – कनखल में ही बाबा रामदेव द्वारा स्थापित यह आश्रम आयुर्वेदिक पद्वति के द्वारा इलाज करने व योग के लिये प्रसिद्ध है।

14. **वेद निकेतन धाम** – स्वामी श्री वेद भारती द्वारा स्थापित धाम। इस धाम में यात्रियों के आवास हेतु 150 कमरे हैं जिनमें यात्री निःशुल्क ठहर सकते हैं।

हरिद्वार के पास गंगा नदी के तट पर हरिद्वार से 24 किलोमीटर दूर ऋषिकेश है। यह अन्य तीन तरफों से हरी भरी पहाड़ियों से घिरा एक मनोरम शहर है। यहाँ ट्रेन, टैक्सी व बस से हमेशा जा सकते है। ऋषिकेश अपने पावन स्थल व मन्दिरों से भरा है। यह बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, फूलों की घाटी आदि का प्रवेश द्वार है। पुरातन काल में ऋषि मुनियों के अतिरिक्त, मध्यकालीन ऋषि शंकराचार्य, रामानुज आदि ने भी इस स्थान के शान्त वातावरण में कुछ समय व्यतीत किया।

दर्शनीय स्थल

1. **लक्ष्मण झूला** – हरिद्वार से ऋषिकेश जाने हेतु गंगा के ऊपर एक लकड़ी का पुल है, जिसका एक पैर या स्तम्भ गंगा के इस पार और दूसरा उस पार है। यह हवा के झौके से हिलता रहता है। इस पुल से ऋषिकेश व गंगा का विहगंम दृश्य दिखता है। पास ही श्री लक्ष्मण जी का मन्दिर है।

2. **राम झूला** – अब एक दूसरा पुल भी लक्ष्मण झूला की तरह बनाया गया है जिसे रामझूला या शिवानन्द झूला कहते हैं।

3. **शिवानन्द आश्रम** – प्रसिद्ध संत शिवानन्द जी का आश्रम और उनके द्वारा स्थापित दिव्य जीवन संघ का मुख्यालय है।

4. **कैलाश आश्रम** – लक्ष्मण झूले के ठीक सामने चौदह मंजिलों वाला कैलाश आश्रम है। इस आश्रम में यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था व उनकी सुविधा के लिये पुस्तकालय व चिकित्सालय भी है। स्थान मनोरम है।

5. **गुरुद्वारा** – ऋषिकेश लक्ष्मण झूला मार्ग पर बना गुरुद्वारा आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त है। भवन का शिल्प कलात्मक है।

6. **स्वर्गाश्रम** – लक्ष्मण झूला – ऋषिकेश मार्ग पर स्थित इस आश्रम में यात्रियों के ठहरने की सुविधा है। आश्रम द्वारा गंगा के आर पार ले जाने व ले आने हेतु एक निःशुल्क मोटर बोट सेवा चलाई जाती है। यहाँ एक औषधि निर्माण शाला भी है।

7. **गीता भवन** – स्वर्गाश्रम के बाद ऋषिकेश में मन्दिरों की भरमार है। गीता भवन सर्वप्रथम आता है। भवन में लक्ष्मी नारायण का सुन्दर मन्दिर है। भवन की दीवारों पर रामायण व महाभारत की कथायें चित्रों द्वारा दर्शाई गयी हैं। इस भवन में यात्रियों के आवास की भी व्यवस्था है।

8. **परमार्थ निकेतन** – गीता भवन के बाद परमार्थ निकेतन नामक विशाल द्वार वाला आश्रम है। इसके प्रांगण में देवी देवताओं आदि की भव्य मूर्तियाँ बनी हैं। इसमें चारों तरफ दर्पण लगे हैं जिनमें देवी देवताओं की मूर्तियों का परावर्तित रूप दिखता है। इसमें प्रवचन हेतु एक बड़ा सभागार भी है।

9. **भरत मन्दिर** – ऋषिकेश नगर के बीच में बौद्ध मन्दिरों जैसी बनावट वाला भरत मन्दिर है।

10. **त्रिवेणी घाट** – भरत मन्दिर से कुछ आगे गंगा के तट पर एक पक्के कुंड में पर्वत के तीन स्रोतों से जल आता है। इस को गंगा, जमुना, सरस्वती के संगम जैसा महत्व प्राप्त है। इसे त्रिवेणी कहते हैं। यहाँ के स्नान का अत्यन्त महत्व है।

11. **वाराह मन्दिर** – त्रिवेणी घाट के पास ही एक मन्दिर है। स्कन्द पुराण के अनुसार वाराह रूपी विष्णु यहाँ शिलारूप में अवस्थित हैं। वर्तमान में यहाँ शिवलिंग स्थापित है।

12. **वीरभद्र महादेव** – हरिद्वार से ऋषिकेश के रास्ते में ऋषिकेश से 5 किलोमीटर पहले यह मन्दिर है। कहा जाता है इसी स्थान पर भगवान शिव ने दक्ष का यज्ञ विध्वंस करने हेतु वीरभद्र को उत्पन्न किया था।

13. **शत्रुध्न मन्दिर** – मुनि की रेती के मध्य में गंगा किनारे यह मन्दिर है। कहते हैं कि इसी स्थान पर शत्रुध्न जी ने तप किया था।

14. **चन्द्रेश्वर महादेव** – जिस स्थान पर चन्द्रभागा नदी गंगा से मिलती है उसी स्थल पर चन्द्रदेव ने गौतम ऋषि के शाप के निवारण हेतु तप किया था। इस स्थल का मन्दिर चन्द्रेश्वर महादेव कहलाता है।

15. **सोमेश्वर महादेव मन्दिर** – ऋषिकेश से पश्चिम में इस स्थान पर शुकदेव जी ने तप किया था। देवताओं ने रम्भा अप्सरा को उनके तप को भंग करने को भेजा था। शुकदेव मुनि के शाप से रम्भा एक जलधारा बन गई। यहाँ का मन्दिर सोमेश्वर महादेव मन्दिर कहलाता है। नदी रम्भा नदी कहलाती है।

16. **पातालेश्वर महादेव** – भरत मन्दिर के पास स्थित यह मन्दिर है।

17. **नीलकंठ महादेव** – ऋषिकेश से 24 किलोमीटर दूर पाशीकूट पर्वत की तलहटी में नीलकंठ महादेव का प्रसिद्ध मन्दिर है। ऋषिकेश से बस और टैक्सी की यात्रा की सुविधा है।

नरेन्द्र नगर

ऋषिकेश से 15 किलोमीटर दूर गंगा के किनारे, टिहरी चम्बा के मार्ग में स्थित एक मनोरम स्थान है। इस नगर को टिहरी के राजा नरेन्द्रशाह ने बसाया था। यहाँ के दूर दूर तक की पर्वत घाटियों के रमणीक दृश्य पर्यटकों को मोह लेते हैं। यह केवल मनोहारी वातावरण में शान्ति से प्रकृति के सौंदर्य का आनन्द लेने वाले पर्यटकों का मनपसन्द स्थान है। यहाँ का राजमहल अत्यन्त कलात्मक है। यहाँ एक नन्दी की खूबसूरत प्रतिमा भी दर्शनीय है। यहां भारतीय प्र.वि.नि. का एक होटल भी है।

देहरादून

देहरादून दिल्ली से 315 किलोमीटर हरिद्वार से 50 किलोमीटर, व ऋषिकेश से 42 किलोमीटर दूर हिमालय पर्वत की गोद में बसा एक खूबसूरत शहर है। वर्तमान में यह उत्तरांचल की राजधानी है। देहरादून अपने नैसर्गिक सौंदर्य एवं स्वस्थ जलवायु के लिये एक आकर्षक स्थान है। यह शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है। यहाँ अनेकों प्रसिद्ध विद्यालय हैं जिनमें देश के सभी स्थानों के छात्र शिक्षा प्राप्त करते हैं। देहरादून में, वन अनुसन्धान संस्थान, राष्ट्रीय सैन्य अकादमी, राष्ट्रीय सैन्य कॉलेज, भारतीय वन प्रशिक्षण केन्द्र, भारतीय प्रशासन प्रशिक्षण संस्थान के अतिरिक्त अनेकों राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों का मुख्यालय है जिनमें सर्वे आफ इन्डिया, तेल व प्राकृतिक गैस निगम मुख्य हैं।

देहरादून मसूरी का द्वार है। यह उत्तरांचल का अन्तिम रेलवे स्टेशन है। यहाँ से टैक्सी या बस से ही मंसूरी या उत्तरांचल के अन्य स्थानों को जा सकते हैं। यहाँ का बासमती चावल संसार प्रसिद्ध है।

दर्शनीय स्थल

1. **मालसी मृग पार्क** – देहरादून से 10 किलोमीटर की दूरी पर मिनी प्राणी उद्यान है। यह प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर है। इसमें एक बच्चों का भी पार्क हैं

2. **सहस्त्र धारा** – 14 किलोमीटर दूर दो पहाड़ियों के बीच सहस्त्रधारा गंधक के पानी का झरना है।

3. **खलंग स्मारक** – देहरादून सहस्त्रधारा मार्ग पर स्थित यह स्मारक 1000 फुट ऊँचा है जो गढ़वाल शासकों एवं अंगरेजों के बीच हुए युद्ध का स्मारक है जो गढ़वाल शासकों के शौर्य का प्रतीक है।

4. **रौबर्स गुफा** – देहरादून से 8 किलोमीटर दूर यह गुफा पहाड़ों से घिरी है। यह एक पिकनिक स्थल है। प्रकृति का अद्‌भुत करिश्मा यहाँ दिखता है। जब सामने बहता झरना एकाएक भूमिगत होकर लुप्त हो जाता है और कुछ दूरी पर फिर प्रगट हो जाता है। यहाँ कई गुफाएँ हैं जिनमें जल भरा रहता है। इस स्थल को ताच्छूपानी भी कहते हैं।

5. **वन अनुसन्धान व प्रशिक्षण केन्द्र** – 7 किलोमीटर दूर इस भव्य भवन वाले वन्य अनुसंधान केन्द्र में वन्य अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया जाता है। इसमें एक वनस्पति संग्रहालय भी है।

6. **चन्द्रवनी** – दिल्ली देहरादून मार्ग पर देहरादून से 7 किलोमीटर दूर स्थित चन्द्रवनी में एक कुण्ड है जिसे गौतम कुंड कहते हैं। ऐसी धारणा है कि यहाँ गौतम ऋषि का आश्रम था।

7. **डाकपत्थर** – देहरादून से 45 किलोमीटर दूर यमुना नदी के किनारे शिवालिक पर्वत श्रेणी के बीच स्थित इस घाटी में एशिया की सबसे बड़ी विद्युत परियोजना है जो दर्शनीय है। यहाँ आवास हेतु ग.प.वि.नि. का विश्रामगृह भी है।

8. **आसन झील** – देहरादून – चकराता मार्ग पर 44 किलोमीटर दूर एक कृत्रिम झील व बैराज बना है। इस झील में नौकायन की सुविधा है। यहाँ दूर दूर के पक्षी शरद ऋतु में आकर अपना निवास बनाते हैं। यहाँ ठहरने हेतु ग.प.वि.नि. का विश्राम गृह है।

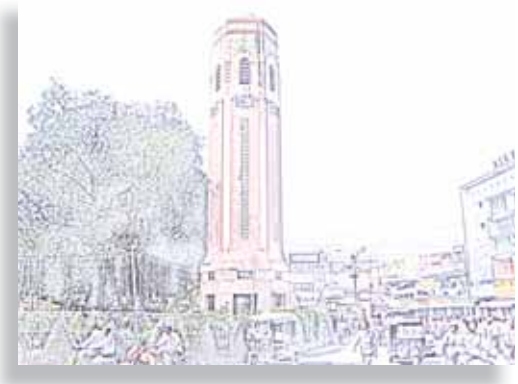

9. **कालसी** – आसन झील से पहले 40 किलोमीटर दूर चकराता मार्ग पर कालसी है जहाँ सम्राट अशोक का शिलालेख यमुना नदी के किनारे पर है।

10. **लाखामण्डल** – चकराता से 40 किलोमीटर दूर इस स्थल पर एक प्राचीन व विशाल मन्दिर है इसके बाहरी भाग में अनेकों देवी देवताओं की आकृतियाँ अंकित है। इस मन्दिर परिसर में दो शिवलिंग भी है।

11. **चकराता** – देहरादून से 96 किलोमीटर दूर करीब 6500 की ऊँचाई पर बसा चकराता, सघन वन व सुन्दर पहाड़ियों से घिरा एक रमणीक स्थान है।

12. **टाइगर फॉल** – चकराता से 6 किलोमीटर दूर 300 फीट की ऊँचाई से गिरता जल प्रपात की ध्वनि गर्जन करती लगती है। अतः इसे टाइगर फॉल कहते हैं।

13. **टपकेश्वर महादेव मन्दिर** – 5 किलोमीटर दूर यह मन्दिर एक गुफा में है। इसके विशाल शिवलिंग पर पत्थरों से जल टपकता रहता है।

14. **गुरुरामराय दरबार** – यह गुरुद्वारा देहरादून रेलवे स्टेशन से लगभग 1 किलोमीटर दूर दर्शनी गेट बाजार के पास है। इस गुरुद्वारे में लगभग 500 भित्ति चित्र हैं। परिक्रमा तथा भीतरी छत पर फूल पत्तियों और ज्यामितीय आकृतियाँ उकेरी गई हैं। गुरुद्वारे में प्रवेश हेतु चारों दिशाओं में चार द्वार हैं। दक्षिणी प्रवेश द्वार पर सिखों के 6 गुरुओं के चित्र बने हैं। इसे कार्ड बैल द्वार कहते हैं। मेहराबदार रास्ते की छतों पर भी गुरुओं के चित्र बने हैं। चारों कोनों

में गुरु रामदास की चारों पत्नियों की समाधियाँ हैं। इन पर भी चित्रकारी की गई है। मुख्य मंदिर के बाद महंत निवास पर गुरु नानक के जन्म साक्षी के 19 सुन्दर चित्र हैं। पश्चिमी दरवाजा झंडा गेट कहलाता है। इस गेट पर नूरजहाँ का चित्र बना है। यह नूरजहाँ का एकमात्र चित्र है।

15. **क्लीमेंट टाउन** – दून घाटी के दक्षिण में इस स्थान पर काफी संख्या में तिब्बती शरणार्थी बसे हैं। यहाँ एक चर्च और एक मोनास्ट्री भी है। यहाँ पर एशिया का सबसे ऊँचा शान्ति स्तूप 185 फीट ऊँचा है।

16. **तपोवन** – देहरादून रायपुर रोड पर 6 किलोमीटर दूर इस स्थान पर 4 किलोमीटर सड़क मार्ग है जहाँ तक वाहन जा सकते हैं। शेष 2 किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है। यह स्थान अत्यन्त रमणीक है। यह एक किले का भग्नावशेष व एक तप्त कुण्ड है।

17. **माइन्डरौलिंग मोनास्ट्री** – 1965 में बनी यह मोनास्ट्री देहरादून के पास क्लीमेंट नगर में है। 2001 में इसमें एक स्तूप बना जो सफेद रंग का चार मंजिला है। यह 215 फीट ऊँचा और 100 वर्ग फीट चौड़ा है। इसमें बुद्ध की जीवन की घटनाओं को चित्रित किया गया है।

18. **कान्हा ताल** – देहरादून के पास ही कान्हा ताल है। यहाँ का वातावरण शान्त सुरम्य व सुन्दर है।

सुकेती – देहरादून से करीब 80 किलोमीटर दूर नाहन के रास्ते में है। सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन अंबाला है जहाँ से सुकेती की दूरी 125 किलोमीटर है। सुकेती पार्क एशिया का अकेला पार्क है जहाँ आकर पता चलता है कि मनुष्य आदिम युग में आ गया है। इस पार्क में कई जीवों के फाइबर ग्लास में बने असली आकार के मॉडल है जैसे विलुप्त विशालकाय जमीनी कछुए, मगरमच्छ, चार सींग वाले जिराफ, काफी लम्बे दांतों वाला टाइगर, करीब 12 फुट लम्बे दांतों वाला हाथी इत्यादि जो लगभग 85 लाख वर्ष पहले हुआ करते थे।

यहाँ एक म्युजियम भी है जिसमें अनेकों चार्ट मॉडल पेंन्टिंग इत्यादि रखे गये हैं जो वर्तमान को अतीत से जोड़ते हैं।

मसूरी

यह उत्तरांचल का प्रसिद्ध हिलस्टेशन 6000 फीट ऊँचा है। अपनी मनोहारी सुन्दरता के कारण इसे हिलस्टेशन की रानी कहते हैं। यह देहरादून से 25 किलोमीटर है। देहरादून भारत के सभी भागों से रेल, सड़क व हवाई यात्रा से जुड़ा है। देहरादून से मसूरी की 25 किलोमीटर यात्रा पहाड़ों के टेढ़े मेड़े रास्ते से जाती है जो प्राकृतिक सुषमा से भरपूर है। चारों तरफ से पहाड़ों से घिरी मसूरी यह अत्यन्त खूबसूरत पर्यटन स्थल है। मसूरी से देहरादून और देहरादून से मसूरी का नजारा रात में हजारों बिजली के बल्बों से जगमगाता हुआ अत्यन्त मनोहारी लगता है।

दर्शनीय स्थल

1. **कैमल्स बैक** – शहर के शोरगुल से दूर इस पहाड़ी का आकार ऊँट की पीठ की तरह है। इसी कारण इसे कैमल्स बैक कहते हैं। यह एक मनोरम स्थल है। यहाँ टट्टू की घुड़सवारी का आनन्द लिया जा सकता है।

2. **म्युनिसिपल पार्क** – मसूरी के मुख्य बाजार माल रोड पर पुस्तकालय के पास यह उद्यान है। इसका हरा भरा लान खूबसूरत है और फूलों की विभिन्न प्रजातियों की क्यारियाँ हैं। चीड़ और देवदार के विशाल वृक्ष भी है। एक कृत्रिम झील और बच्चों के खेलने का स्थान भी है।

3. **गन हिल** – इस हिल के दोनों तरफ ऊँची पहाड़ियाँ और नीचे गहरी खाई है। इस हिल टॉप पर रोपवे ट्राली से जाते हैं। ऊपर से नीचे का दृश्य रोमांचित करता है। इस टॉप से सुदूर हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों का सुन्दर दृश्य दिखता है।

4. **लाल टिब्बा** – यह मसूरी का सबसे ऊँचा स्थल है जो समुद्रतल से करीब 7400 फीट ऊँचा है। यहाँ से गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ, नन्दादेवी आदि का सुंदर दृश्य देखने हेतु एक टेलीस्कोप लगा है।

5. **केम्पटी फॉल** – मसूरी से 15 किलोमीटर दूर मसूरी चकराता मार्ग पर स्थित यह स्थल ऊँचे पहाड़ों से घिरा है जहाँ ऊँची पहाड़ियों से गिरते हुये झरने में स्नान का आनन्द लिया जाता है।

6. **घनौल्टी** – मसूरी टिहरी रोड पर 24 किलोमीटर दूर घनौल्टी एक बेहद खूबसूरत स्थल है। यह प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर एक शान्त वातावरण वाला पर्यटन स्थल है। यहाँ जड़ी बूटियों का इको पार्क है। कु. प. वि. नि. का आवास गृह भी है।

7. **मसूरी लेक** – मसूरी झील में नौकायान करते हुये आस पास की प्राकृतिक सुन्दरता पर्यटक घंटों देखते रहते हैं।

8. **तिब्बती मन्दिर** – यह एक भगवान बुद्ध का खूबसूरत मन्दिर है। इस मन्दिर के पीछे कुछ ड्रम लगे हैं। ऐसी मान्यता है कि इन्हें घुमाने से मनोकामना पूरी होती है।

9. **एवरेस्ट हाउस** – मसूरी की लाइब्रेरी से कुछ दूर पर सर जार्ज एवरेस्ट हाउस है जिनके नाम पर हिमालय की सबसे ऊँची चोटी का नाम माउंट एवरेस्ट रखा गया है।

10. **क्लाउड एन्ड** – ऐवरेस्ट हाउस से 6 किलोमीटर दूर घने जंगलों से घिरा एक होटल है। जहाँ आकर लगता है कि चारों ओर बादल ही बादल है। इसी से इस स्थान को क्लाउड एन्ड कहते हैं। यह एक अत्यन्त ही रमणीक स्थान है।

इनके अतिरिक्त मसूरी के आसपास अनेकों झरने व खूबसूरत स्थल और चोटियाँ हैं जहाँ ट्रेकिंग करने का भी आनन्द ले सकते हैं। आवास हेतु यहाँ अनेकों छोटे बड़े होटल हैं।

यमुनोत्री

हिमालय की ऊँची चोटियों में से बन्दरपूँछ है जो करीब 19000 फीट ऊँचा है। इसके पश्चिमी भाग को कालिन्द कहते हैं। यह स्थान पूरे वर्ष बर्फ से ढका रहता है जहाँ पहुंचना अत्यन्त कठिन है। यह कालिन्द पर्वत से ही जमुना नदी का उद्‌गम है। इसी पर्वत से नदी की दो पतली धाराएँ यमुनोत्री घाटी पहुँचती है। इसी से यमुना का एक

नाम कालिंदी भी है। इसी यमुनोत्री घाटी में यमुना का मन्दिर बनाया गया है। इस मन्दिर का निर्माण टिहरी नरेश राजा सुदर्शन शाह ने 1839 में कराया था। मन्दिर में यमुना जी का काले पत्थर की सुन्दर मूर्ति है। अक्षय तृतीया से दीपावली तक मंदिर दर्शन हेतु खुला रहता है।

यमुनोत्री उत्तराखण्ड के चार धामों में से एक है। समुद्रतल से करीब 10,500 फुट की ऊंचाई पर हिममंडित शिखरों की गोद में स्थित यमुनोत्री का यात्रा मार्ग किसी समय काफी दुर्गम माना जाता था। पर अब हरिद्वार से ऋषिकेश, नरेन्द्र नगर, चम्बा, टिरी, धरासूँ, बरकोट होते हुये हनुमान चट्टी तक सड़क मार्ग से जा सकते हैं। सम्पूर्ण यात्रा अत्यन्त ही रमणीक, दर्शनीय व प्राकृतिक सुषमा से भरपूर है। हनुमान चट्टी से 13 किलोमीटर दूर यमुनोत्री की यात्रा पैदल या टट्टुओं से करनी पड़ती है। रास्ते में कई स्थानों पर ठहरने की व्यवस्था है। हनुमान चट्टी से 7 किलोमीटर पर यमुना बाई कुण्ड है जिसका जल साधारण गर्म है। यहाँ स्नान कर अन्तिम 6 किलोमीटर के बाद यमुनोत्री मन्दिर पहुंचते हैं। मन्दिर के बाहर एक विशाल पत्थर का स्तम्भ है। गर्म पानी के कई स्रोतों में सबसे अधिक गर्म सूर्यकुण्ड है। जिसके जल से स्नान कर यात्री मन्दिर में दर्शन हेतु जाते हैं। यमुनोत्री घाटी में जमुना का पानी नीला (साँवला) दिखता हैं। अतः इसे काली गंगा भी कहते हैं। इसकी खोज महर्षि असित ने की थी। यह भारत की प्रसिद्ध सात नदियों में से एक है। आगे चल कर यमुना नदी के किनारे ही भारत के कई प्रसिद्ध नगर, दिल्ली, आगरा, मथुरा, वृन्दावन व बटेश्वर बसे है। बटेश्वर के बाद यमुना का गंगा से संगम प्रयाग में हेाता है।

केदारनाथ

केदारनाथ, भगवान शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यह मंदाकिनी नदी के तट पर समुद्रतल से लगभग 11000 फुट की ऊँचाई पर स्थित है। यह उत्तराखण्ड के पंचकेदारों का सबसे प्रमुख मन्दिर है। केदारनाथ जाने के दो मार्ग है। ऋषिकेश – देवप्रयाग – रूद्रप्रयाग – विलवाड़ा – रामपुर – गौरीकुन्ड – रामबाग – केदारनाथ। यह 223 किलोमीटर है। दूसरा मसूरी – धन्तोली – चम्बा – टिहरी – गुप्तकाशी – गौरीकुन्ड – केदारनाथ यह 260 किलोमीटर है। मन्दिर अत्यन्त भव्य व सुन्दर है। इस

मन्दिर में भगवान शिव भैंस के पीठ के आकार के है। पूर्ण रूप पंचकेदारों के मिलने से बनता है। द्वितीय केदार मदमहेश्वर में नाभि, तृतीय केदार तुंगनाथ में बाहु, चतुर्थ केदार रूद्रनाथ में मुख तथा पंचम केदार कल्पेश्वर में जटा है। यही पंचकेदार हैं।

गौरीकुन्ड तक की यात्रा वाहन से करते हैं। यहाँ गर्म पानी के कुंड गौरीकुंड में स्नान कर पार्वती की पूजा करते हैं। यहाँ से केदारनाथ की 14 किलोमीटर यात्रा पैदल, घोड़ों अथवा खटोली से की जाती है।

मन्दिर के बाहरी प्रसाद में देवी पार्वती और देवी लक्ष्मी आदि की मूर्तियाँ हैं। समीप ही हंसकुण्ड है जहाँ पितरों की मुक्ति के लिये श्राद्ध व तर्पण करते हैं। मन्दिर के ऊपर सुनहला कलश है। मंदिर के बीच में भैंसे के पिछले धड़ की आकृति का पत्थर है। यहाँ शिव इसी आकृति के हैं।

यहाँ से कुछ दूर दक्षिण में रेतस कुण्ड है जिसका जल अत्यन्त पवित्र माना जाता है। इसके उत्तर में सात पग पर बर्फ के बीच तप्त जल है। इसके आगे स्फटिक लिंग है। मंदिर के दक्षिण एक छोटी पहाड़ी पर मुकुन्दा भैरव है। इस स्थान से हिमालय का विहंगम दृश्य दिखता है। पास ही में एक बर्फ की झील है जो मन्दाकिनी नदी का उद्‌गम स्रोत है।

मंदिर के पीछे आदि शंकराचार्य की समाधि है। केदारनाथ का पट सर्दियों में बन्द रहता है। अतः भगवान शिव की 6 महीना पूजा उरवीमठ से की जाती है। उरवीमठ गौरी कुन्ड से 41 किलोमीटर है। उरवीमठ में अस्पताल और डाकखाना भी है।

गुप्त काशी

गुप्तकाशी केदारनाथ से आती मंदाकिनी नदी के तट पर समुद्रतल से करीब 4000 फुट ऊँचा स्थित है। स्थान अत्यन्त मनोरम है। कहा जाता है कि भगवान शंकर ने यहाँ गुप्त रूप से निवास किया था। इसी से इसे गुप्त काशी कहते हैं। यहाँ विश्वनाथ जी का मन्दिर है। मंदिर में स्वयंभू लिंग स्थापित है। गर्भगृह के सामने मणिकर्णिका कुंड है जिसमें दो धाराएँ आती है। एक धारा गणेशमुख से व दूसरी गऊ मुख से आती है। मान्यता है कि एक जलधारा यमुना से दूसरी गंगा से आती है।

इस मन्दिर के उत्तर पूर्व में एक अर्द्धनारीश्वर मन्दिर है।

त्रियुगी नारायण

केदारनाथ से नीचे आने पर गौरीकुण्ड से नीचे 5 किलोमीटर दूर सोनप्रयाग है। सोनप्रयाग से 5 किलोमीटर दूर त्रियुगी नारायण का प्राचीन विशाल मन्दिर है। ऊँचाई 7800 फीट नारायण की नाभि से जल निकल कर बाहर विष्णु कुण्ड में जाता है। यहाँ कुल 4 कुंड है। ब्रम्हकुड, रूद्रकुंड, और सरस्वती कुंड अन्य 3 कुण्ड है। इन कुंडों में स्नान, तर्पण व जलपान करते हैं। सरस्वती कुंड में स्वर्ण रंग के साँप रहते हैं पर उनसे भय नहीं है। कुंड के आगे एक स्थान पर एक कुंड में निरन्तर अग्नि जलती रहती है। कहा जाता है यहीं पर पार्वती का विवाह हुआ था।

पंच केदार

1. **मदमहेश्वर** – गौरीकुंड से वापस आते समय सोनप्रयाग से 23 किलोमीटर दूर नाला नामक स्थान है। नाला से कालीमठ होते हुये 30 किलोमीटर दूर 11000 फीट की ऊँचाई पर प्राचीन मन्दिर मदमहेश्वर है। इस मन्दिर की बनावट बौद्ध मन्दिरों जैसा है। मन्दिर भगवान शिव का है। पूरा रास्ता प्राकृतिक सौन्दर्य से

भरपूर है। इस मन्दिर की गणना पंचकेदार में की जाती है। यह द्वितीय पंचकेदार है।

2. **तुंगनाथ** – नाला से नीचे उतरने के रास्ते में गुप्त काशरी के बाद कुन्ड है जहाँ से उरवीमठ जाती है। उरवीमठ से 30 किलोमीटर दूर चोपता है। चोपता से 5 किलोमीटर पैदल की चढ़ाई कर तुंगनाथ पहुँचते हैं जो लगभग 12000 फुट ऊँचा है। इसी पर्वत पर भगवान शिव का मन्दिर है। शिवलिंग काले पत्थर का है। इस स्थान से हिमालय की कई चोटियों का विहंगम दृश्य दिखता है। यहाँ दो कुन्ड अमृतकुंड व आकाश कुण्ड है। यह तृतीय पंचकेदार है।

3. **रूद्रना** – गोपेश्वर से करीब 24 किलोमीटर दूर है। गोपेश्वर तक सड़क यात्रा सुलभ है। पूरा रास्ता घने जंगलों और कुछ ग्लेशियरों से भरा है। चीड़ व ओक के जंगलों को पार कर फुलताग्राम पहुँचते हैं। वहाँ चाय आदि मिल जाती है। फिर करीब 11000 फीट की ऊँचाई पर घने जंगलों के पार पनार आता है। यहाँ गड़रियों के बीच रात्रि व्यतीत कर अगले दिन 12000 फीट ऊँची पितृ धारा पहुंचते हैं। चढ़ाई अत्यन्त कठिन है। उसके बाद पनचारी होते हुए रूद्रनाथ पहुँचते हैं। यह करीब 10,500 फीट की ऊँचाई पर बना पंच केदारों में से एक है। यहाँ भगवान शिव के मुख की पूजा की जाती है। पूरे भारत में यही एक मन्दिर है जहाँ शिव के मस्तक की पूजा होती है। अन्य सभी शिव मन्दिरों में लिंग की पूजा होती है। अन्य दर्शनीय स्थलों में नारद कुंड, सरस्वती कुंड, पंच पांडवों के मन्दिर व शेषशायी भगवान विष्णु की प्रतिमा है। पंच केदारों में चतुर्थ रुद्रनाथ की यात्रा सबसे कठिन है।

4. **कल्पेश्वर** – पंच केदारों का पांचवां केदार कल्पेश्वर बद्रीनाथ के रास्ते में हेलंग नामक स्थान से 9 किलोमीटर दूर हैं। 8000 फीट ऊँचे इस मन्दिर में भगवान शिव की जटा है। मन्दिर एक गुफा में है। इसे कल्पनाथ भी कहते है।

पंच प्रयाग

ऋषिकेश और बद्रीनाथ के बीच दो नदी के संगम जिन्हें प्रयाग कहते हैं। पाँच स्थान पर आता है। इन्हे पंच प्रयाग कहते हैं। पहला देव प्रयाग ऋषिकेश से 70 किलोमीटर दूर है। इनकी परस्पर दूरी निम्न है।

1.	ऋषिकेश से देवप्रयाग	–	70 किलोमीटर अलकनन्दा भागीरथ
2.	देवप्रयाग से रूद्रप्रयाग	–	70 किलोमीटर अलकनन्दा मंदाकिनी
3.	रूद्रप्रयाग से कर्णप्रयाग	–	31 किलोमीटर अलकनन्दा पिंडार गंग
4.	कर्णप्रयाग से नन्दप्रयाग	–	21 किलोमीटर अलकनन्दा नन्दाकिनी
5.	नन्दप्रयाग से विष्णुप्रयाग	–	68 किलोमीटर अलकनन्दा धौली गंगा

देवप्रयाग

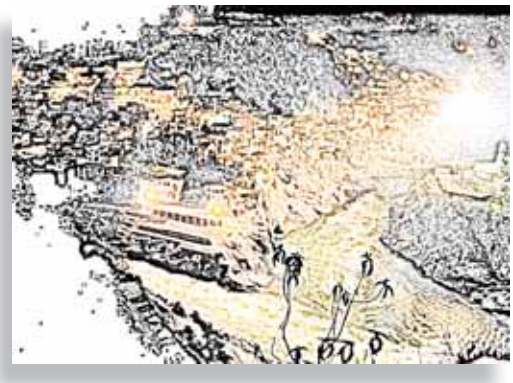

यह ऋषिकेश से बद्रीनाथ रास्ते का पहला पड़ाव है। हरिद्वार से 93 किलोमीटर दूर भागीरथी और अलकनन्दा के संगम पर स्थित है। समुद्रतल से 2800 फीट ऊँचे इस स्थान पर रघुनाथ जी का भव्य मंदिर है। स्नान हेतु नदी के किनारे पक्का घाट है। मंदिर में रघुनाथ जी की श्याम वर्ण की भव्य व विशाल मूर्ति है। यहाँ से एक रास्ता गंगोत्री व यमुनोत्री को जाता है, दूसरा बद्रीनाथ व केदारनाथ की ओर जाता है।

रूद्रप्रयाग

रूद्रप्रयाग पंच प्रयागों में से एक है। यह श्रीनगर से 34 किलोमीटर है। यह मन्दाकिनी और अलकनन्दा के संगम पर बसा है। यहाँ एक प्राचीन रूद्रनाथ जी का मन्दिर है। यहाँ से एक रास्ता तिलवाड़ा होते हुये केदारनाथ जाता है जो 84 किलोमीटर है। दूसरा मार्ग बद्रीनाथ जाता है जो 139 किलोमीटर है। यहाँ से बद्रीनाथ के रास्ते में कर्णप्रयाग और नन्दप्रयाग आते हैं जिनकी गणना पंच प्रयागों में की जाती है।

श्रीनगर

देवप्रयाग से 35 किलोमीटर दूर श्रीनगर की स्थापना 14वीं सदी में गढ़वाल के राजा अजयपाल ने की थी। यहाँ अलकनन्दा के तट पर कमलेश्वर महादेव का प्राचीन मंदिर है। यहाँ एक विश्वविद्यालय भी है। यहाँ से 29 किलोमीटर दूर पौड़ी एक सुन्दर स्थान है जहाँ से नैनीताल जा सकते है।

जोशीमठ

जोशीमठ श्रीनगर से 135 किलोमीटर है। यहाँ भगवान बद्रीनाथ जी शीतकाल में 6 महीना निवास करते हैं क्योंकि बद्रीनाथ का मन्दिर बर्फ से ढक जाता है। यह स्थान करीब 6000 फीट ऊँचा है। बद्रीनाथ जी की गद्दी के पास दो कुण्ड है जिनमें जल निरन्तर गिरता रहता है। जोशीमठ से एक रास्ता गोविन्दघाट होते हुए बद्रीनाथ जाता है। एक अन्य रास्ता तपोवन को जाता है। 12 किलोमीटर दूर यह स्थल शान्त व अत्यन्त रमणीक है। एक अन्य रास्ता औली जाता है जहाँ बर्फ के विशाल मैदान में सर्दियों का खेल स्की होता है। यहाँ गढ़वाल विकास मंडल का होटल भी है। फोन – 01389–2118

विष्णु प्रयाग

पंच प्रयागों में से एक विष्णु प्रयाग जोशीमठ से 10 किलोमीटर दूर है। यहाँ धौली गंगा का प्रवाह अत्यन्त वेगपूर्ण है। इसके दायीं तरफ नर पर्वत और बाईं तरफ नारायण पर्वत है। प्रचन्ड प्रवाह के कारण यात्री लोटे से स्नान करते हैं।

गोविन्दघाट

यह विष्णु प्रयाग से 10 किलोमीटर आगे एक सुन्दर स्थान अलकनन्दा के तट पर स्थित है। यहाँ से पाण्डुकेश्वर होते हुये बद्रीनाथ जाते हैं। एक अन्य रास्ता घाघरिया जाता है। जहाँ से उत्तर दिशा मे संसार प्रसिद्ध फूलों की घाटी है और पूर्व दिश में हेमकुण्ड साहिब गुरुद्वारा। गोविन्दघाट से अलकनन्दा के तट पर एक विशाल गुरुद्वारा बना है जहाँ लंगर व आवास की व्यवस्था है।

पान्डुकेश्वर

गोविन्दघाट से 41 किलोमीटर दूर इस स्थान पर पाण्डवों का बनवाया योग बद्री भगवान का प्राचीन मन्दिर है।

हनुमान चट्टी

पान्डुकेश्वर से 9 किलोमीटर हनुमान चट्टी में हनुमान जी का मंदिर है। कहा जाता है कि इसी स्थान पर हनुमान जी ने बद्री नारायण की आराधना की थी।

बद्रीनाथ

बद्रीनाथ ऋषिकेश से करीब 300 किलोमीटर दूर है। केदारनाथ से रूद्रप्रयाग होते हुये बद्रीनाथ 243 किलोमीटर है। मसूरी से चम्बा होकर 330 किलोमीटर है तथा नैनीताल से अलमोड़ा कौसानी बैजनाथ होते हुए 346 किलोमीटर है।

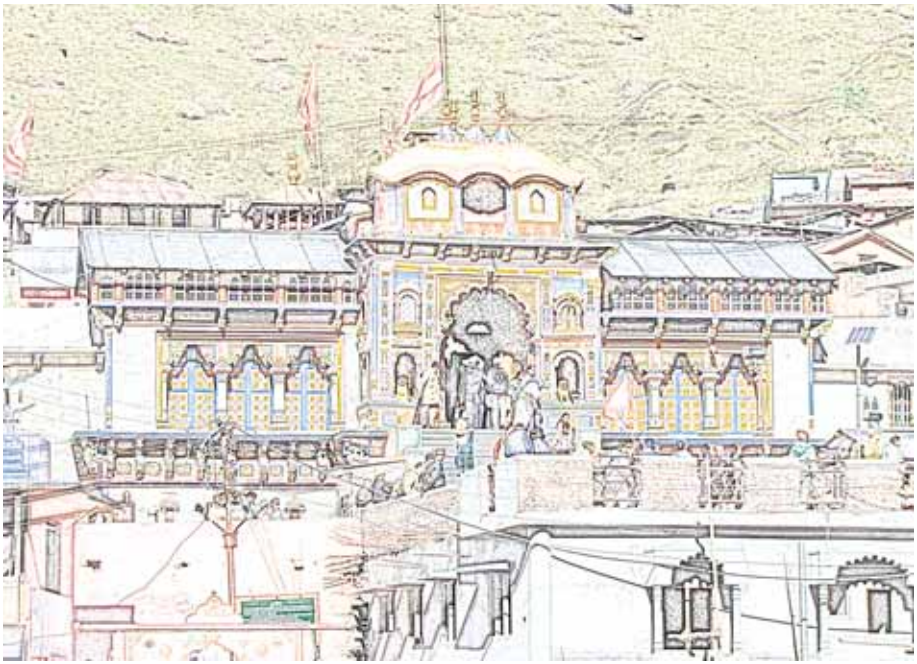

बद्रीनाथ मन्दिर लगभग 9500 फीट की ऊँचाई पर नर व नारायण पर्वत के बीच अलकनन्दा के दक्षिण तट पर स्थित है। मन्दिर भव्य है। मन्दिर में भगवान बद्रीनाथ की काले पत्थर की प्रतिमा पद्मासन ध्यान में है। वह बहुमूल्य वस्त्राभूषण से सज्जित है। सर पर सुन्दर मुकुट है और ललाट में हीरा जड़ा है। अगल बगल नर नारायण, उद्धव, कुबेर व नारद जी की मूर्तियाँ हैं। मन्दिर के सामने तप्त कुंड है जिसमें गर्म जल रहता है। कहा जाता है कुंड में सपत्नीक स्नान करना चाहिए। दर्शनार्थी स्नान कर बद्रीनाथ का दर्शन करने जाते है। भगवान का यह मन्दिर पन्द्रहवी शताब्दी में तत्कालीन गढ़वाल नरेश का बनवाया हुआ है। मन्दिर का कलश सोने का है, जिसे अहिल्याबाई ने बनवाया था।

मान्यता है कि श्री बद्रीनाथ की वर्तमान मूर्ति वह प्राचीन मूर्ति है जिसे देवर्षि नारद पूजा करते थे। बौद्ध धर्म के उत्कर्ष काल में बौद्धों ने इस मूर्ति को अलकनन्दा में गिरा दिया था। वह स्थान नारद कुंड कहलाता है। जगद्गुरू आदि शंकराचार्य दैवी प्रेरणा से यहाँ आकर अलकनन्दा के पत्थरों के बीच नारदकुंड से इस प्राचीन मूर्ति को निकाला और तप्त कुंड के पास स्थापित किया।

आस पास के दर्शनीय स्थल

1. **पंचशिला** – तप्त कुण्ड के ऊपर पाँच शिलाएं, नारद शिला, वाराह शिला, नृसिंह शिला, गरूड़ शिला और मार्कन्डेय शिला है। इनके दर्शन की महत्ता केदारनाथ जैसी है।

2. **ब्रह्म कपाल** – मन्दिर से कुछ दूर इस शिला पर पिण्डदान होता है। मान्यता है कि ब्रह्मा जी अपनी पुत्री संध्या पर आसक्त हो गए तब महादेव ने कुपित होकर उन पंचमुखी ब्रह्मा का एक मस्तक काट डाला। तब से ब्रह्मा चर्तुमुख हो गये। कटा हुआ सिर महादेव के हाथ में चिपक गया। किसी भी तीर्थ में वह सिर महादेव के हाथ के साथ चिपका रहा। बद्रीनाथ में अलकनन्दा के समीप वह सिर शिव जी के हाथ से छूट कर गिर गया। वह स्थान ब्रह्मकपाल कहलाता है।

3. **मातामूर्ति** – 3 किलोमीटर दूर माना गाँव के पास बद्रीनाथ जी की माता श्री मूर्ति देवी का मन्दिर है।

4. **शेष नेत्र** – नजदीक ही नर पर्वत की एक शिला पर शेष जी की आँखे स्पष्ट दिखती हैं

5. **चरण पादुका** – पश्चिम की ओर एक ऊँचे टीले पर चरण पादुका के चिन्ह है। इस पर्वत पर विभिन्न फूलों की भरमार है।

6. **बसुधारा** – बदरीकाश्रम से 8 किलोमीटर दूर 400 फीट की ऊँचाई से झरना गिरता है। इस स्थान पर जाने हेतु जोशी मठ से आज्ञा लेनी पड़ती है।

7. **मातागाँव** – 4 किलोमीटर दूर अलकनन्दा के तट पर स्थित है। पास ही अलकनन्दा व सरस्वती का संगम स्थल है। इसी गाँव में गणेश गुफा व व्यास गुफा है और आगे भीम शिला है। कहा जाता है सरस्वती नदी के तट पर महर्षि वेदव्यास ने श्रीमद्भागवत की रचना की थी।

8. **अलकापुरी** – बद्रीनाथ से कुछ दूर लक्ष्मीबन है। इसके पास अलकापुरी जहाँ सतोपन्थ व भागीरथी खड्ग ग्लेशियर मिलते हैं। यही अलकनन्दा का उद्गम स्थल है। समस्त पुराणों में विष्णु पदि गंगा, अलकनन्दा को ही बनाया गया है। यही आदि गंगा है। आगे 14440 फीट की ऊँचाई पर सतोमन्थ सरोवर है।

पंच बद्री

उत्तराखण्ड के इस क्षेत्र में पाँच बद्री हैं जिन्हें पंचबद्री कहते हैं।

1. **श्री बद्री नारायण** – इन्हें बद्री विशाल भी कहते हैं। जो मुख्य बद्री धाम है।

2. **आदि बद्री** – यह कर्ण प्रयाग से 18 किलोमीटर दूर रानीखेत मार्ग पर स्थित है। सौ वर्ष पहले यहाँ करीब 16 मन्दिर थे। वर्तमान में 14 मन्दिर जीर्ण अवस्था में हैं। यह स्थान 3000 फीट की ऊँचाई पर बेनी पर्वत की उपत्यका में अष्टा सरिता के किनारे है। नाम से स्पष्ट है कि यह सरिता आठ धाराओं व सरिताओं से मिल कर बनी है। इन आठ सरिताओं के विभिन्न आख्यान है। कुछ इनको आठ मातृकाओ से जोड़ते हैं तो कुछ विद्वान इन्हें भगवती के आठ अवतारों से जोड़ते हैं। अष्टसरिता के किनारे शिलाओं के बीच 5 कुण्ड हैं। भगवान आदि बद्री की काले पत्थर की तीन फीट ऊँची प्रतिमा है। इन मूर्ति के चार खंड हैं चारों को जोड़ने से जोड़ पता नहीं चलता है। ऐसी कलाकृति उत्तम शिल्प का द्योतक है। यह विष्णु की अन्य मूर्तियों से भिन्न है। इनके तीन हाथ में शंख चक्र व गदा है। चौथे दायें नीचे के हाथ में पद्म नहीं है। यह हाथ वरद् मुद्रा में है। मूर्ति के पीछे दोनों तरफ विष्णु व शिव सपत्नीक विराजमान हैं। उपर नवग्रह पंक्ति है और उसके ऊपर नारायण योगासन की मुद्रा में हैं।

   सभी मंदिरों के गर्भगृह संकीर्ण व वर्गाकार है। सभी मंडप केवल मुख्य आदि बद्री मन्दिर में ही है। सभा गृह के बाहर दोनों ओर बैठने हेतु पत्थर के आसन हैं।

   मुख्य मंदिर के अतिरिक्त गरूड़, अन्नपूर्णा, सूर्य, लक्ष्मीनारायण, सत्यनारायण, गणेश, अंजनी माता, शिव दुर्गा जानकी के मन्दिर भी है। आदि बद्ररी की मूर्ति कला की दृष्टि से अद्वितीय है।

   आदि बद्री से 3 किलोमीटर उत्तर गढ़वाल राज्य के संस्थापक राजा कनकपाल के महल के खंडहर चादपुर गढ़ी में हैं।

3. **वृद्धबद्री** – जोशीमठ से 3 किलोमीटर पहले अनीमठ नामक स्थान वृद्धबद्री का अत्यन्त पुराना मन्दिर है। समुद्रतल से इसी ऊँचाई करीब 4000 फीट है। यहाँ कभी भी बर्फ नहीं गिरती है।

4. **भविष्य बद्री** – जोशीमठ से 25 किलोमीटर दूर तपोवन के मार्ग पर है। 19 किलोमीटर दूर सलधार तक जा सकते है। वहाँ से 6 किलोमीटर पैदल यात्रा कर ही मन्दिर पहुँचते हैं। मंदिर से नृसिंह की प्रतिमा है।

5. **योग बद्री** – जोशीमठ से करीब 20 किलोमीटर दूर पान्डुकेश्वर में योग बद्री का मन्दिर है।

औली

औली जोशीमठ से 13 किलोमीटर दूर समुद्रतल से लगभग 10,000 फीट की ऊँचाई पर स्थित हिमालय का एक अत्यन्त सुन्दर स्थान है। जोशीमठ से पैदल 4 किलोमीटर की दूरी है। यहाँ का रोपवे प्रसिद्ध है। यह रोपवे जोशीमठ से औली तक है और 4.5 किलोमीटर लम्बी है। इस रोपवे के 10 टावर हैं। 8वें टावर पर रुकने की व्यवस्था है। यहाँ से 800 फीट नीचे लिफ्ट से उतर कर ग.प्र.वि. निगम के आवासीय परिसर में निवास कर सकते हैं। यहाँ फाइबर ग्लास के बने हट्स भी उपलब्ध हैं। 10वें टावर से 1.5 किलोमीटर दूर ओक व कोनिफर के सघन पेड़ों के बीच मखमली घास का अत्यन्त सुन्दर मैदान है जिसे गुरसो बुग्याल कहते हैं। यहाँ से 1 किलोमीटर दूर छन्ना कुण्ड मीठे पानी का सरोवर है। 15 किलोमीटर दूर तपोवन व 18 किलोमीटर दूर सेलाघाट में गर्म पानी के कुण्ड हैं। गुरसो बुग्याल में बहुरंगे फूल खिले रहते हैं।

अक्टूबर नवम्बर में यह सारा क्षेत्र बर्फ से ढक जाता है। इन बर्फीली ढलानों पर शीतकालीन खेल आयोजित किए जाते हैं। बसंत ऋतु में यहाँ का सौन्दर्य दशनीय है जब विभिन्न फूलों ही मादक गंध पूरे वातावरण को मस्त कर देती है। यहाँ से हिमालय की विभिन्न चोटियाँ नन्दा देवी, त्रिषुली, चौखम्भा, हाथी पर्वत आदि का सुन्दर दृश्य दिखता है। ग.प.वि. निगम के होटल के आवास को सुरक्षित करने हेतु 013712–2226 फोन नं. की व्यवस्था है।

फूलों की घाटी

विष्णु प्रयाग से गोविन्द घाट 11 किलोमीटर बस यात्रा गोविन्दघाट से घाँघरिया 15 किलोमीटर पैदल रास्ता है। यह 10000 फीट की ऊँचाई पर है। यहाँ एक गुरुद्वारा भी है। घाँघरिया से उत्तर की ओर 3–4 किलोमीटर दूर प्रसिद्ध फूलों की घाटी है। यह स्थान जून से अक्टूबर तक खुला रहता है। यह घाटी लगभग 20 वर्ग किलोमीटर में फैली है। इस घाटी में हजारों दुर्लभ किस्म के फूलों का अप्रतिम सौंदर्य कोई भी नहीं भुला सकता। यह एक अनोखा अनुभव है। पूरी घाटी, पर्वत श्रृंखलाओं से घिरी है जिससे कई जलधाराएँ निकल कर पुष्पावती नदी में गिरती है। इन्हीं धाराओं के पास सबसे खूबसूरत फूल एवं दुर्लभ ब्रह्मकमल मिलते हैं। ब्रह्मकमल दुनिया में अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। यही हाल इस घाटी के करीब 3000 प्रजातियों के फूलों का है। इन फूलों की सुन्दरता को देखने संसार भर के पर्यटक एवं वैज्ञानिक आते हैं। इन्हीं फूलों में प्रसिद्ध कोबरा, लिली और ब्लू पौपी है। इन्हीं फूलों में सफेद रंग का सेक्सट्रिगर फूल भी है जो वियाग्रा का काम करती है।

हेमकुन्ड

घांघरिया से करबी 5000 फीट की चढ़ाई चढ़ने पर 14200 फीट की ऊँचाई पर स्थित प्रसिद्ध हेमकुण्ड गुरुद्वारा मिलता है। यहाँ गुरु गोविन्द सिंह ने तपस्या की थी। चारों तरफ बर्फ से झिलमिलाती पर्वत श्रृखलाएँ है। जिनके बीच करीब 1.5 किलोमीटर के क्षेत्र में फैली स्वच्छ पारदर्शी झील है। पूरा स्थान ही मनमोहक है। यहाँ एक विशाल गुरुद्वारा हेमकुंड साहिब है। यहाँ ठहरने व खाने की उत्तम व्यवस्था है।

घाँघरिया में ग.प्र.वि.नि. का आवासगृह, सरकारी गेस्ट हाउस व रैन बसेरा में ठहरने की व्यवस्था है।

चन्द्रशिला

चन्द्रशिला, दिल्ली से 417 किलोमीटर दूर बद्रीनाथ और केदारनाथ के बीच स्थित है। इस छोटी सी चोटी को चन्द्रमा का पर्वत कहते हैं। यहाँ के सूर्योदय में हिमालय की चोटियाँ अद्भुत नजारा दिखाती हैं। यहाँ पहुँचना कुछ कठिन है। दिल्ली से ऋषिकेश

230 किलोमीटर है। वहाँ से चोपता 180 किलोमीटर चोपता में बारिश कभी भी आ सकती है। 2500 मीटर की ऊंचाई पर बसे चोपता में की प्राकृतिक सुषमा आनन्ददायक है। चोपता से तुंगनाथ तक 6 किलोमीटर का पहाड़ की चढ़ाई है। पूरा रास्ता जंगलों से होकर जाता है। तुंगनाथ में बर्फ की चादर बिछी होती है। इस चढ़ाई में 4–5 घंटे लगते हैं। जब बारिश आती है तो बर्फ की फिसलन पर फिसलने से बचना अपने आप में एक कला है। आगे चन्द्रशिला 4100 मीटर ऊँची पर स्थित है। यहाँ से हिमालय का अद्‌भुत दर्शन होता है। ट्रेकिंग के प्रेमी चन्द्रशिला अवश्य आते हैं।

गंगोत्री

गंगोत्री ऋषिकेश से 248 किलोमीटर दूर लगभग 10,000 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ भागीरथी का विशाल मन्दिर है जिसमें गंगा, यमुना, सरस्वती पार्वती व अन्नपूर्णा के मूर्तियों के समक्ष महाराज भगीरथ की हाथ जोड़े हुए मूर्ति है। यहाँ से कुछ दूर पर केदार–गंगा का संगम है। इस स्थान से 1 किलोमीटर की दूरी पर गंगा शिवलिंग पर गिरती है।

गंगोत्री विशाल स्थान नही है। पर इसकी महिमा विशाल है। गंगोत्री की प्राकृतिक शोभा अत्यन्त मनोहारी है। गंगोत्री गंगा का उद्‌गम स्थल नहीं है। गंगोत्री से 28 किलोमीटर दूर गौमुख गंगा का उद्‌गम स्थल है।

गौमुख

गौमुख, गंगोत्री से 28 किलोमीटर दूर गंगा का उद्‌गम स्थान है। यह स्थान ऋषिकेश से 276 किलोमीटर है। यहाँ पहुचना काफी मुश्किल है क्योंकि मार्ग अत्यन्त कठिन है। गंगोत्री से करीब 22 किलोमीटर चीड़ का वन चीड़वारा मिलता है। गौमुख जाने वाले यात्री यहाँ रात्रि विश्राम करते है। प्रातः ही यात्री चीड़वारा से 6 किलोमीटर दूर गोमुख के दर्शन को प्रस्थान करते है क्योंकि रात्रि तक वापस आना पड़ता है। गोमुख के ग्लेशियर से गंगा की धारा निकलती है। यहाँ की प्राकृतिक सुषमा अत्यन्त सुन्दर है। गौमुख में जल इतना शीतल है कि हाथ डालते ही हाथ सुन्न हो जाता है। स्नान करने वाले यात्री अग्नि जलाकर ही स्नान करते हैं। चूंकि गौमुख की यात्रा अत्यन्त कठिन है अतः अधिकांश यात्री गंगोत्री मे ही रुककर गंगा जी की पूजा अर्चना करते हैं गंगोत्री में गंगा की चौड़ाई केवल 44 फीट और गहराई 3 फीट है। यह ठहरने की उचित व्यवस्था है।

गंगोत्री में गंगा जी के मन्दिर के पास ही एक भैरव मन्दिर भी है। गंगोत्री के अन्य धार्मिक स्थल सूर्यकुन्ड, विष्णुकुंड व ब्रह्मकुंड है। जिस शिला पर राजा भागीरथ ने तप किया था वह भी मौजूद है। शीतकाल में यह स्थान बर्फ से ढक जाता है। अतः पंडे चल मूर्तियों को मारकन्डेय क्षेत्र ले जाते हैं। वहीं शीतकाल में गंगा की पूजा होती है।

हरसिल

गंगोत्री के रास्ते में गंगोत्री से 34 किलोमीटर पहले समुद्रतल से 7860 किलोमीटर की ऊँचाई पर हरसिल आता है। यहाँ की वादियों की सुन्दरता अतुल्य है। नदी और झरनों के साथ सघन देवदार वृक्षों के वन इस घाटी को अनुपम सौंदर्य प्रदान करते हैं गंगोत्री और गौमुख जाने वाले यात्री यहाँ ठहर कर अपनी थकान मिटाते हैं और यहाँ की खूबसूरती का आनन्द लेते हैं।

गंगौत्री हरसिल से आगे 10,000 फीट की ऊँचाई पर है। इसकी प्राकृतिक सुन्दरता बेजोड़ है। गंगोत्री के पास ही भागीरथी नदी के पास गौरी शंकर जल प्रपात है। गंगोत्री मन्दिर से 9 किलोमीटर दूर वृक्षों के आखिरी समूह के बीच चिरवासा ग्राम स्थित है। इसके आगे 8 किलोमीटर बाद योगवासा है जहाँ ठहरने हेतु आवास उपलब्ध है। भोजवास से 4 किलोमीटर दूर गौमुख है जहाँ गंगोत्री ग्लेशियर से भागीरथी नदी निकलती है। यहाँ से शिवलिंग पर्वत का मनोहारी दृष्य दिखता है। हरसिल से 7 किलोमीटर की दूरी पर सात झीलें 9000 फीट की ऊँचाई पर फैली है। जिनका प्राकृतिक दृश्य बेजोड़ है।

उत्तर काशी

उत्तर काशी यमुनोत्री से लगभग 70 किलोमीटर है। हरिद्वार से 350 किलोमीटर है।

उत्तर काशी भागीरथी, असि व वरुण नदियों के मध्य में है। इसके पूर्व में करणवत पर्वत पर विमलेश्वर महादेव का मन्दिर है। उत्तरकाशी की पंचक्रोशि परिक्रमा वरुणा संगम पर स्नान कर, विमलेश्वर महादेव को जल चढ़ाकर की जाती है।

उत्तर काशी एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। यहाँ विश्वनाथ मन्दिर, एकादश रूद्र मन्दिर, गोपेश्वर मन्दिर, परशुराम, दत्तात्रेय, रूद्रेश्वर, लक्षेश्वर मन्दिर है। शिव दुर्गा व जड़ भैरव का मन्दिर भी है।

विश्वनाथ मन्दिर के सामने त्रिशूल है। कहा जाता है कि देवासुर संग्राम के समय छूटी हुई शक्ति (त्रिशूल) है। यहाँ जयपुर की राजमाता का बनवाया मंदिर भी दर्शनीय है।

नैनीताल

नैनीताल दिल्ली से 303 किलोमीटर दूर है। निकटतम रेलवे स्टेशन काठगोदाम है जो दिल्ली से 270 किलोमीटर है। काठगोदाम से नैनीताल 33 किलोमीटर है। यह यात्रा बस या टैक्सी से करते है।

नैनीताल पूरे वर्ष जा सकते हैं पर गर्मियों में मौसम बहुत सुहावना रहता है अतः पर्यटक यहाँ मई जून में आना अधिक पसन्द करते हैं।

यहाँ ठहरने हेतु सभी प्रकार के होटल उपलब्ध हैं। इनके अतिरिक्त सरकारी रेस्ट हाउस, धर्मशाला एवं लॉज भी उपलब्ध हैं।

नैनीताल झीलों का शहर है। कहते हैं यहाँ कभी 60 झीलें थीं। अधिकतर झीलें अब सिमटकर तालाब बन गई है। नैनीताल समुद्र तल से करीब 7000 फीट की ऊँचाई पर

बसा है। अग्रेजों के जमाने में यह उत्तर प्रदेश की गर्मियों की राजधानी हुआ करती थी। उस समय का गवर्नर हाउस अब उत्तरांचल हाइकोर्ट है।

काठगोदाम से नैनीताल का 33 किलोमीटर का पूरा सफर मनोहारी दृश्यों से भरपूर है।

दर्शनीय स्थल

1. **नैनी झील** – यह शहर के बीचोंबीच नैनीताल का प्रमुख आकर्षण है। यह एक प्राकृतिक झील है जिसके चारों तरफ शहर बस गया है। इस झील में बोटिंग भी कर सकते हैं। इस झील को ऋषि सरोवर भी कहते हैं। किनारे नैना देवी का मन्दिर है।

2. **माल रोड** – यह नैनीताल का प्रमुख रोड है। जहाँ पर्यटक घूमने का मजा लेते हैं। यह मल्ली ताल और तल्लीताल को जोड़ता है। रिक्शा से भी माल रोड पर घूम सकते हैं और नाव से भी मल्लीताल से तल्लीताल जाते हैं।

3. **चिड़ियाघर** – 1 किलोमीटर दूर चिड़ियाघर है। जहाँ विभिन्न प्रकार के चिड़ियों के अतिरिक्त काला भालू, हिरण, बाघ, चीता आदि भी देखे जा सकते हैं।

4. **स्नो व्यु** – शहर से 2.5 किलोमीटर दूर ऊँची पहाड़ी है जिस पर से नैनीताल का विहंगम दृश्य व हिमालय की कई चोटियों को देख सकते हैं। यहाँ रोपवे से भी जा सकते हैं।

5. **किलवटी** – किलवटी नैनीताल से 12 किलोमीटर है। यहाँ ठहरने हेतु फॉरेस्ट रेस्ट हाउस है जिसका रिजर्वेशन नैनीताल के फॉरेस्ट आफिसर करते हैं। नैनीताल से 2 किलोमीटर जाते ही जंगल शुरू होता है जो किलवटी तक जाता है। यहाँ ट्रेकिंग करने भी पर्यटक जाते हैं। किलवटी एक शान्त व रमणीक स्थान है जहाँ के शान्त वातावरण में प्रकृति का आनन्द ले सकते हैं

6. **सात ताल** – नैनीताल से 22 किलोमीटर दूर सात ताल हैं। यहाँ हरे भरे जंगलों के बीच 7 सुन्दर ताल हैं। यहाँ ठहरने के लिये एक सरकारी टूरिस्ट बंगला भी है।

7. **भीमताल** – नैनीताल से 23 किलोमीटर दूर भीमताल एक सुन्दर ताल है जिसमें एक टापू भी है। टापू पर एक एक्वेरियम है। होटल एवं टूरिस्ट बंगला भी है।

8. **नौकुचिया ताल** – भीमताल से मात्र 4 किलोमीटर दूर यह ताल है। इसके नौ कोने हैं जिसके कारण इसे नौकुचिया ताल कहते हैं। पूरी झील पेड़ों से घिरी व कमल के फूलों से भरी है। यहाँ नौकायान का अलग मजा है।

9. **मुक्तेश्वर** – नैनीताल से 52 किलोमीटर दूर मुक्तेश्वर समुद्रतट से करीब 2300 मीटर की ऊँचाई पर स्थित एक अत्यन्त सुन्दर हिल स्टेशन है। यहाँ एक मन्दिर है जो भगवान शिव को समर्पित है। यह शिवलिंग सफेद संगमरमर का है। शिवलिंग के चारों तरफ कई देवताओं की मूर्तियां है। आस पास कई खूबसूरत स्थल हैं जहाँ से प्रकृति के सौन्दर्य का पान किया जा सकता है। सबसे खूबसूरत रामगढ़ 26 किलोमीटर दूर है। निवास हेतु कई छोटे बड़े होटलों के अतिरिक्त कुमाऊं प्र.वि.नि. का रेस्ट हाउस भी है। यहाँ पर काफी पुराना वेटिनरी रिसर्च इंस्टीट्यूट है।

10. **हनुमान गढ़ी** – 3 किलोमीटर दूर करीब 6000 फीट समुद्रतल से ऊंचाई पर हनुमान जी की 12 फुट ऊँची मूर्ति है। मन्दिर दर्शनीय है यहाँ सूर्यास्त देखने का अलग आनन्द है।

11. **खुरणताल** – 6 किलोमीटर दूर एक छोटी झील है। अकसर वहाँ पिकनिक मनाते हैं।

12. **भवाली** – नैनीताल से 11 किलोमीटर दूर यह स्थान प्राकृतिक सुन्दरता, स्वच्छ वातावरण व फूलों की मंडी के लिये मशहूर है। यहाँ प्रायः लोग स्वास्थ्य लाभ हेतु आते हैं। यहाँ एक क्षय रोग सेनिटोरियम भी है।

13. **बागेश्वर** – इसे बागनाथ भी कहते हैं। यह बैजनाथ और जागेश्वर के बीच स्थित है। यहाँ से ही प्रसिद्ध पिंडारी ग्लेशियर जाते हैं। कुमायु मंडल विकास निगम इस ग्लेशियर की यात्रा का प्रबन्ध करता है। यहाँ उत्तरायणी मेला में आस पास की कुटीर उद्योग सामग्री बिकती है।

14. **शीतला खेत** – समुद्र तल से करीब 6500 फीट की ऊँचाई पर स्थित शीतलाखेत एक मनमोहक स्थान है। यहाँ काठगोदाम से बस द्वारा आ सकते हैं। पर्यटक यहाँ के शान्त, मनमोहक वातावरण में निवास कर प्रकृति का आनन्द लेते हैं। यहाँ निवास हेतु ग. प. वि. निगम का होटल है।

अलमोड़ा

नैनीताल से 67 किलोमीटर दूर अलमोड़ा को कुमायुं क्षेत्र की शान कहा जाता है। यह एक सुन्दर हिल स्टेशन है। पूरा शहर अर्द्धचन्द्राकार बसा है। अलमोड़ प्राचीन काल से कुमाऊँ राज्य की राजधानी रही है। अंग्रेजों के समय भी यह गौरव बना रहा। कुमाऊँवासी समृद्ध परम्परा के मिलनसार है। यहाँ की लोककला व रीति रिवाज उन्नत है। ताँबे और पीतल और मिट्टी के खूबसूरत बर्तन अपनी गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ कई किले व भव्य महल चंद व कल्मुदी राजाओं ने बनाए हुए हैं।

यहाँ का प्राकृतिक वातावरण अत्यन्त सुहावना है।

दर्शनीय स्थल

1. **लाला बाजार व चौक बाजार** यहाँ के प्रसिद्ध बाजार हैं। यहाँ उचित मूल्य पर सभी वस्तुएं मिलती हैं।

2. **डियर पार्क** – सांयकाल घूमने का अच्छा स्थान है।

3. **ब्राइट एन्ड कॉर्नर** – 2 किलोमीटर दूर एक खूबसूरत जगह है जहाँ से हिमालय की हिमाच्छादित चोटियाँ दिखती हैं। पास ही ठहरने हेतु सर्किट हाउस है। यहाँ से प्रातः काल सूर्योदय का सुंदर नजारा दिखता है। सूर्यास्त भी देखा जा सकता है।

4. **कटारमल** – 17 किलोमीटर दूर प्रसिद्ध सूर्यमन्दिर है मन्दिर के स्तम्भ, दरवाजे व आकृतियों की शिल्पकला उत्तम है।

5. **कालीमठ** – 5 किलोमीटर दूर कालीमठ एक सुन्दर पिकनिक स्थल है। यहाँ से अलमोड़ा शहर का सुन्दर दृश्य दिखता है। कुछ ही दूर पर कसार देवा का मन्दिर है।

6. **राजकीय संग्रहालय** – बस स्टैन्ड के नजदीक ही स्थित इस संग्रहालय में अलमोड़ा की पुरानी संस्कृति और राजाओं के समय की दुर्लभ वस्तुएं संग्रहित है।

विनसर

नैनीताल से 96 किलोमीटर व अलमोड़ा से 32 किलोमीटर दूर घने जंगलों के बीच अलमोड़ा की सबसे ऊँचा स्थान है। यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य बेजोड़ है। यहाँ से हिमालय की हिमाच्छादित चोटियों का चाँदनी रात का नजारा अत्यन्त खूबसूरत दिखता है। यह 7वी व 8वीं सदी में चन्द्र राजाओं की राजधानी भी रही है। यहाँ ठहरने के दो स्थान हैं। कुमाऊँ विकास निगम का विश्राम गृह व एक निजी होटल।

विनसर से 300 किलोमीटर फैले हिमालय पर्वत की विराट स्वरूप का दर्शन अत्यन्त मनोहारी है। राजा कल्याण चन्द्र ने यहाँ एक विनसर महादेव मन्दिर भी बनवाया था। दिल्ली से अलमोड़ा बस सेवा भी है।

कौसानी

नैनीताल से कौसानी 120 किलोमीटर है। कौसानी का प्राकृतिक सौंदर्य अद्‌भुत व अप्रतिम हैं, करीब 6000 फीट की ऊँचाई पर बसा यह स्थल अत्यन्त रमणीक है। हिमालय की गोद में बसी यह नगरी कोसी और गोमती नदी के बीच पिंगनाथ पहाड़ी पर स्थित है। इसकी हरी भरी मदमाती घाटियाँ, जंगलों में खिलते रंग बिरंगे फूल और बर्फ से ढकी पहाड़ी चोटियाँ पर्यटकों का मन मोह लेती हैं। महात्मा गाँधी ने इसे धरती का स्वर्ग कहा था। बर्फ से ढकी चोटियों से घिरा कौसाली सूर्योदय व सूर्यास्त के अदभुत दृश्य के लिये प्रसिद्ध है। सूर्योदय में जब सूर्य की किरणें नंदा देवी की बर्फीली चोटियों पर पड़ती है तो चाँदी के समान चमकती सम्पूर्ण पर्वत श्रृंखला सुवर्णमय हो जाती है। यह अद्‌भुत नजारा वर्णन से परे है।

इसके दर्शनीय स्थल -

1. **अनासक्ति आश्रम** – कौसानी में गाँधी जी कुछ दिन ठहरे थे और वहाँ अनासक्ति योग नामक पुस्तक की रचना की थी। उनके ठहरने के स्थान का नाम भी अनासक्ति आश्रम हो गया है।

2. **पं. सुमित्रानन्दन पंत** की स्मृति में बनाया गया पंत संग्रहालय

3. **पिनाकेश्वर** – 20 किलोमीटर दूर पिनाकेश्वर एक मनोरम स्थान है जहाँ दूर दूर तक फैली ऊँची नीची घाटियाँ व पर्वत श्रृंखलाओं का मनमोहक दृश्य देखते ही बनता है।

4. **बैजनाथ** – कुछ दूर कोसी नदी के तट पर एक छोटा कसबा बैजनाथ है जहाँ कई मन्दिर हैं।

रानी खेत

रानीखेत काठगोदाम से 83 किलोमीटर दूर है। पर्वतों की गोद में बसा यह नगर समुद्रतल से करीब 6000 फीट की ऊँचाई पर घने वृक्षों से घिरा एक मनोरम पर्वतीय स्थल हैं। यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य मनमोहक है, वातावरण शान्त व खुशनुमा।

दर्शनीय स्थल

1. **गोल्फ मैदान** – 5 किलोमीटर दूर अलमोड़ा के रास्ते में है।

2. **वनस्पति संग्रहालय** – यहाँ हजारों प्रकार की जड़ी बूटियों व हिमालय की वनस्पतियों का संग्रह है।

3. **द्वारहाट** – 32 किलोमीटर दूर हरी भरी वादियों में बसा द्वारहाट में लगभग 65 मन्दिर हैं जिनके स्थापत्य कला देखने लायक है।

4. **झूलादेवी मन्दिर** – 7 किलोमीटर दूर एक अच्छा मंदिर है। पास ही काली का मन्दिर है।

5. **बालेश्वर महादेव मन्दिर** – चम्पानत जिला स्थित श्री बालेश्वर महादेव का मन्दिर अत्यन्त प्राचीन है। पत्थर का यह प्राचीन मन्दिर कहा जाता है कि त्रेतायुग का है। जिसकी स्थापना कपिवर बाली ने की थी। मन्दिर की पच्चीकारी अत्यन्त सुन्दर है। इसके दीवारों और स्तम्भों की खुदाई बेजोड़ है।

6. **जागेश्वर** – अलमोड़ा से 34 किलोमीटर दूर जागेश्वर कलात्मक मंदिरों का नगर है। मुख्य मंदिर जागेश्वर मंदिर वास्तुकला का अद्‌भुत नमूना है।

पिथौरागढ़

पिथौरागढ़ समुद्रतल से 5000 फीट की ऊँचाई स्थित करीब 10 किलोमीटर के घेरे फैली हुई एक मनोरम, प्राकृतिक छटा से भरपूर घाटी है। इसे सौर घाटी भी कहा जाता है। कैलाश मानसरोवर झील का रास्ता भी यहाँ से होकर जाता है। इस इलाके पर चन्द्रवंशी व कत्यूरी राजाओं का शासन रहा है जिनके कार्यकाल में काफी विकास हुआ था। इनको राज्य के प्रभाव क्षेत्र में नेपाल, तिब्बत व हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्से भी शामिल थे। आज भी प्राचीन इमारतों के खण्डहर इनके वैभवशाली कल की याद दिलाते हैं।

दर्शनीय स्थल

1. **थल केदार** – 6 किलोमीटर दूर थल केदार का वातावरण शान्त व मनोहर है। यहाँ एक प्राचीन मन्दिर है।

2. **चंडाक** – 7 किलोमीटर दूर 6000 फीट की ऊँचाई पर बसा चंडाक प्राकृतिक सुन्दरता से भरपूर है। यहाँ से सम्पूर्ण घाटी का विहंगम दृश्य दिखता है।

3. **ध्वज** – 16 किलोमीटर दूर 7000 फीट की ऊँचाई पर बसा ध्वज एक आकर्षक स्थान है। इस स्थान हिमालय की बर्फ से चोटियों का मनोहारी दृश्य दिखता है।

4. **वेरीनाग** – 102 किलोमीटर दूर अपने चाय के बगान व मनभावन वातावरण के लिये प्रसिद्ध है।

5. **धारचूला** – 102 किलोमीटर दूर धारचूला ऊनी वस्त्रों एवं ऊन से बने सामानों के लिये प्रसिद्ध है।

6. **चौकोड़ी** – 112 कि. दूर चौकोड़ी से हिमालय का भव्य दृश्य दिखता है। यहाँ पहुँच कर ऐसा लगता है कि हिमालय को हाथ बढ़ा कर छू सकते है। यहाँ से सूर्यास्त का दृश्य अत्यन्त सुंदर दिखता है।

7. **कस्तूरी मृग विहार** – चौकोड़ी से 5 किलोमीटर दूर महरूड़ी नामक जंगल में सरकार का कस्तूरी मृग अनुसंधान केन्द्र है।

8. **नारायण आश्रम** – 130 किलोमीटर दूर कैलाश मानसरोवर के रास्ते में यह आश्रम काली नदी के किनारे स्थित है। वातावरण मनमोहक है और आश्रम का वास्तुकला दर्शनीय है। इस आश्रम के शान्त वातावरण को देखते हुये यह लघु कैलाश भी कहलाता है।

9. **मुनस्यारी** – पिथौरगढ़ से 154 किलोमीटर की दूरी पर मुनस्यारी स्थित है। यहाँ के प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त मनोहारी है। इसे हिमगिरी के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ से विभिन्न ग्लेशियरों तक ट्रेकिंग की जाती है।

   सुन्दरडुंगा ग्लेशियर – इस ग्लेशियर का रास्ता दुर्गम है।

   पिंडारी ग्लेशियर – यह सुन्दर ग्लेशियर 3820 मींटर की ऊँचाई है। ऊपर चोटी से नीचे घाटी तक चारों तरफ बर्फ ही बर्फ है। इनमें सीढ़ीनुमा दरारें भी हैं जो मन को लुभाती हैं। दरारों के नीचे कई प्राकृतिक गुफाएं हैं। पिंडारी जागेश्वर होकर जाते हैं जो कौसीनी से 39 किलोमीटर है। पर्यटक बस की सुविधा है।

10. **पाताल भुवनेश्वर** – नैनीताल से 185 किलोमीटर यह पिथौरागढ़ से 147 किलोमीटर है। यहाँ पहुँच कर प्रतीत होता है कि महान रचनाकार देवकी नन्दन खत्री की तिलिस्म की कल्पना कोरी कल्पना नहीं है। यहाँ जमीन के अन्दर 84 सीढ़ियाँ उतर कर विशाल सुरंगों व गुफाओं में पहुंचते हैं जिनमें पत्थर की शिलाओं पर प्राकृतिक रूप से अनूठी कलाकृतियाँ बनी हैं। प्रकृति की इस अद्भुत रचना को देखने हेतु गाइड व रोशनी की व्यवस्था है। यह भूमि के अन्दर 100

फीट की गहराई पर है। यहाँ गुफाओं का सिलसिला है जो युगों पुरानी हैं। ऐसी मान्यता है कि त्रेतायुग के सूर्यवंशी राजा ऋतुपर्ण ने इन गुफाओं को खोज निकाला था। जगदगुरू शंकराचार्य ने 1191 ई. में इस गुफा में पूजा अर्जना की। तब से पूजा होती है। प्रतिदिन पुजारी 84 सीढ़ियाँ उतर कर पूजा करते हैं।

गुफा के अन्दर एक तरफ शेषनाग की मूर्ति है जिनके फन पर पृथ्वी टिकी है। गुफा में एक हवन कुंड भी है। कहा जाता है कि राजा परीक्षित की मृत्यु को रोकने हेतु उनके द्वारा बनाये गये हवन कुंड में मन्त्र बल से सर्प आकर कुंड में गिर जाते थे। फिर भी राजा की मृत्यु तक्षक सर्प के काटने से हो गई। इसी गुफा में आगे आदि गणेश का सिर विहीन धड़ है जिस पर एक पत्थर का कमल बना है जिससे जल की बूँद बराबर गणेशजी के धड़ पर गिरती रहती है। एक तरफ काल भैरव व एक कुत्ते की मूर्ति बनी है। कुछ दूर जाने पर चार गुफाएं मिलती हैं जिन्हें रणद्वार, पापद्वार, धर्मद्वार व मोक्षद्वार कहते हैं। पहले दो द्वार अभी बन्द है। दर्शक केवल दो द्वार देख सकते हैं। त्तोंवाची..... पारिजात वृक्ष है। पत्थर के तने पर जो बिल्कुल लकड़ी जैसा दिखता है। इस तने पर घने पत्तों का जमावड़ा है। यहाँ कामधेनु की भी मूर्ति है और दूध की गिरती धारा भी है। एक हँस की भी आकृति है जिससे अमृत की कथा जुड़ी है। यहाँ पर प्राकृतिक शिव की जटाएं भी है। अन्त में पाण्डवों को भगवान शिव के साथ चौपड़ खेलते दिखाया गया है। गुफा को देख यात्री उस युग की कलात्मकता पर मुग्ध हो जाता है। यहाँ ठहरने हेतु निरीक्षण बंगला व PWD का बंगला है।

कोरबेट राष्ट्रीय उद्यान – यह रामनगर से 51 किलोमीटर और नैनीताल से 118 किलोमीटर की दूरी पर है। यह वन्य जीव जन्तु अभयारणय पूरे देश में प्रसिद्ध है। यह भारत का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान है जिसे 1973 में माना गया। वैसे यह 1935 से ही है। उद्यान में पर्यटकों के भ्रमण हेतु वाहनों की व्यवस्था है। यहाँ का सबसे ऊँचा स्थल कन्दा है जो 1210 मीटर की ऊँचाई पर है। यहाँ से सम्पूर्ण इलाके का अत्यन्त सुन्दर दृश्य दिखता है। यह ठहरने हेतु एक रेस्ट हाउस है। कन्दा के अतिरिक्त धिकाला, खिनानवली, सर्पादुलि, विजरानी व सुलतान में भी रेस्ट हाउस हैं। यहाँ के उद्यान में हाथी, बाघ आदि मुक्त रूप से विचरते हैं।

दूधवा राष्ट्रीय उद्यान – 1977 में दूधवा को राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया। इस उद्यान की विशेषता है इसका प्राकृतिक सौन्दर्य। पूरे क्षेत्र में वन व झीलें हैं। यहाँ का मुख्य आकर्षण बाघ हैं यद्यपि गैंडा, हाथी, भालू, जंगली सुअर, चीता, सभी प्रकार के हिरण, चीतल, नीलगाय, साँभर, हाथी, घड़ियाल व विभिन्न प्रकार के सर्प भी पाए जाते हैं।

पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल

कोलकाता

उत्तर भारत का प्रसिद्ध नगर कोलकाता अंग्रेजों के शासन काल में ब्रिटिश भारत की राजधानी रही है। 1911 में दिल्ली ब्रिटिश भारत की राजधानी है। वर्तमान में कोलकाता पश्चिम बंगाल की राजधानी है।

कोलकाता देश के सभी भागों से रेल, सड़क व हवाई यात्रा से जुड़ा है। यह गंगा (लोकल नाम हुगली) नदी के किनारे है।

प्रसिद्ध स्थलः-

1. **हावड़ा ब्रिज** – कोलकाता जाने वाली अधिकांश ट्रेन हावड़ा में खतम हो जाती हैं। हावड़ा से कोलकाता हुगली नदी पर प्रसिद्ध हावड़ा ब्रिज को पारकर जाते हैं। यह ब्रिज अत्यन्त दर्शनीय है। ब्रिज के दोनों किनारे खंभे हैं। नदी के बीच कोई खम्भा नहीं है।

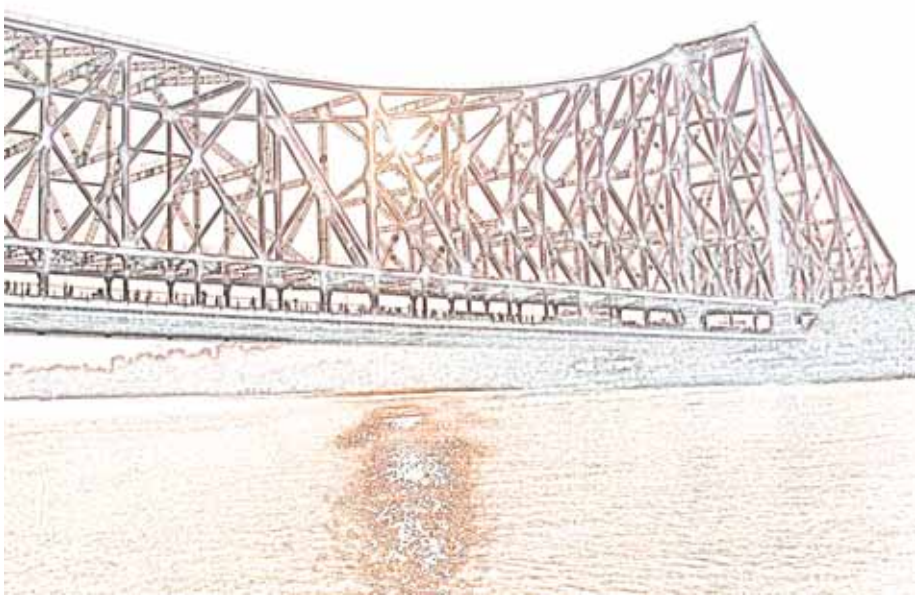

2. **बोटानिकल गार्डेन** – यह हावड़ा में स्थित है। इस 273 एकड़ में फैले बाग का पीपल का पेड़ संसार का सबसे विशाल पेड़ है। महोगनी लकड़ी के पेड़, कथूवा का पाम वृक्ष, विवन्देरि का अमेजोनिका लिली इसकी अन्य मशहूर वृक्ष है। इसके 35000 से अधिक किस्मों के पौधे है। इसे ईस्ट इन्डिया कम्पनी ने 1727 में स्थापित किया।

3. **सेंट जौन चर्च** – यह कलकत्ता का सबसे पुराना चर्च हैं

4. **बेलूर मठ** – दक्षिणेश्वर के गंगा के उस पार बेलूर मठ है। यह रामकृष्ण मिशन का मुख्यालय है। इस मठ की विशेषता है कि विभिन्न कोणों से देखने पर यह मन्दिर मस्जिद और गिर्जाघर दिखता है। 16.5 किलोमीटर दूर स्थित है।

5. **दक्षिणेश्वर मन्दिर** – बेलूर मठ के गंगा के इस पास दक्षिणेश्वर काली का मन्दिर है। इसे रानी रासमती ने 1847 में बनवाया था। स्वामी रामकृष्णा यहीं देवी काली की आराधना पूजा करते थे। इस मन्दिर के प्रांगन में 12 अन्य मन्दिर हैं।

6. **मैदान** – कोलकाता शहर के बीच यह एक विशाल मैदान है जिसके चारों तरफ सड़क है। यह कोलकाता का दिल है। इसी मैदान में कई क्लबों के खेल मैदान है। इसी के किनारे फोर्ट विलियम है।

7. **विक्टोरिया मेमोरियल** – यह विशालकाय व सुन्दर भवन सफेद संगमरमर का है। यह एक मशहूर संग्रहालय है।

8. **काली का मन्दिर** – यह गंगा किनारे कालीघाट में स्थित प्रसिद्ध मन्दिर है। यह 350 साल से भी अधिक पुराना है। यहाँ सती की अंगुली भगवान विष्णु के चक्र से कट कर गिरी थी। अतः यह देश के 51 शक्तिपीठों में से एक है। यहाँ देवी महाकाली के नाम से प्रसिद्ध है और नुकलेश भैरव के साथ प्रतिष्ठित है।

9. **बिड़ला तारामंडल** – यह देश का प्रथम तारामण्डल है जो मैदान के किनारे विक्टोरिया मेमोरियल भवन के पास है।

10. **भारतीय म्यूजियम** – इस म्यूजियम में अन्य संग्रहित वस्तुओं में 4000 साल पुरानी ममी है।

11. **अलीपुर जू** – कलकत्ता के एक छोर पर स्थित जू में पशु पक्षियों का संसार है जिसे बच्चे अवश्य देखते हैं।

12. **इडेन गार्डेन** – राजमहल के पस यह गार्डेन कोलकाता के खेल कूद का मैदान हैं यहाँ अधिकतर क्रिकेट के अन्तरराष्ट्रीय मैच होते हैं। इसके स्टेडियम में 1 लाख दर्शक मैच देख सकते हैं।

13. **राष्ट्रीय पुस्तकालय** – यह भारत का सबसे बड़ा पुस्तकालय है। इसमें 10 लाख से अधिक पुस्तकें संग्रहित हैं।

14. **संगमरमर महल** – उत्तरी कलकत्ता में राजेन्द्र मल्लिक का महलनुमा आवास में संगमरमर के अनेक मूर्तियाँ का संग्रह है। साथ का बाग भी सुन्दर हैं। इस कला के संग्रह को लार्ड मिन्टो ने संगमरमर महल की संज्ञा दी।

आस पास के दर्शनीय स्थल

1. **बन्देल बासबेरिया** – कोलकाता के बन्देल 40 किलोमीटर दूर है। यहाँ पुर्त्तगालियों का बनाया गया चर्च बंगाल का सबसे पुराना चर्च है। पास में ही बासबेरिया में राजा रामेश्वर दत्त ने 1679 ई. में वासुदेव मन्दिर बनवाया। इस प्रसिद्ध टेराकोटा मन्दिर के टेराकोटा टाइल्स पर रामायण व महाभारत के दृश्य उकेरे गये हैं।

2. **कलना** – कोलकाता से 82 किलोमीटर दूर उत्तर में कलना को मंदिरों का नगर कहते हैं। यह भक्ति आन्दोलन का केन्द्र भी रहा है। यहाँ के मन्दिर 1739–1849 के बीच बनाए गए हैं। कलना में 7 बड़े और 12 छोटे मन्दिर हैं। सबसे बड़ा प्रतापेश्वर मन्दिर 1849 का बना है। इस मन्दिर के मेहराबों वाले चार प्रवेश द्वार हैं। सभी द्वारों पर सुन्दर टेराकोटा मूर्तियाँ उकेरी गई हैं।

   बर्दवान के राजमहल राजबाड़ी के पास रानी ब्रजकिशोरी का बनवाया 3 मंजिला लाल जी मन्दिर कृष्ण को समर्पित है। इस मन्दिर के पास ही विशाल अष्टभुजीय डोलमन्य है जिसके परिसर में 108 शिव मन्दिर हैं।

3. **मुर्शिदाबाद** – मुर्शिदाबाद नवाब सिराजुदौला की राजधानी था। नगर में हजार दुआरी महल, काठगोपाल बाग व कटरा मस्जिद दर्शनीय है। हजार दुआरी महल अब एक संग्रहालय है जिसकी देखरेख भारतीय सर्वेक्षण विभाग करता है।

4. **अजीमगंज** – मुर्शिदाबाद से कुछ दूरी पर अजीमगंज है जहाँ रानी भवानी द्वारा बनवाए गए अनेकों टेराकोटा मन्दिर हैं। इनमें प्रमुख भवानीश्वर मन्दिर 1755 ई का बना है। दुसरा प्रसिद्ध मन्दिर 'चार बंगला' मन्दिर है।

5. **नवद्वीप** – कलना से 20 किलोमीटर दूर नवद्वीप चैतन्य महाप्रभु का जन्म स्थल है। यहाँ एक सुन्दर मंदिर भी है।

6. **मायापुर** – नवद्वीप के पास ही मायापुर है जो इस्कोन का अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय है। यहाँ का कृष्ण मन्दिर भव्य है।

7. **गदियारा** – कोलकाता से 60 किलोमीटर दूर गदियारा में नदी का तट व पेड़ों की छाया वाला एक शान्त व शीतल वातावरण वाला स्थान है। यह हुगली, दामोदर व रूपनारायण नदियों के संगम पर बसा है। सप्ताहान्त बिताने का अच्छा स्थान है। आवास के लिये अनेकों होटल व पश्चिम बंगाल पर्यटन विभाग का टूरिस्ट लॉज भी है।

8. **दीघा** – कोलकाता से 175 किलोमीटर दूर दीघा एक मनोरम व शान्त स्थान है। टूरिस्ट कार्यालय से प्रतिदिन 7.15 बजे लक्जरी बस चलती है। यहाँ 6 किलोमीटर लम्बा समुद्रतट है। यहाँ प्रायः पर्यटक शान्त वातावरण का आनन्द लेते हैं। आवास हेतु यहाँ होटलों के अतिरिक्त टूरिस्ट काटेज भी हैं। दीघा में सूर्योदय और सूर्यास्त का मनमोहक दृश्य देखने पर्यटकों की भारी संख्या आती है। यहाँ के साफ सुथरे समुद्रतट पर पैदल चलने का आनन्द व तैरने का आनन्द ले सकते हैं।

   कुछ दूर न्यु दीघा में एक उद्यान व झील है। इस झील में नौकायान की सुविधा है। कोलकाता से दीघा बस से 4 घंटे में पहुँचते हैं और हावड़ा से ट्रेन के द्वारा 3 घंटे में। यहाँ आवास हेतु अनेकों होटल, काटेज आदि हैं।

9. **बस्काली** – गंगा सागर द्वीप के नजदीक एक शान्त वातावरण वाला द्वीप बस्काली है। सफेद रेत की 29 किलोमीटर लम्बी रेत वाला बीच अत्यन्त खूबसूरत है। यह स्थान सीपियों से भरा है अतः बच्चे इसे पसन्द करते हैं।

10. **गंगा सागर** – गंगा सागर द्वीप हुगली नदी के मुहाने पर है। यहीं पर गंगा सागर से मिलती है। इसका धार्मिक महत्व बहुत है। प्रत्येक हिन्दु एक बार गंगा सागर का दर्शन व स्नान करना चाहता है। गंगा सागर द्वीप पर ठहरने हेतु अनेकों आश्रम हैं और पश्चिम बंगाल टूरिस्ट कार्यालय द्वारा संचालित यूथ होस्टल भी है।

11. **सुन्दरवन सुरक्षित वन** – यह कोलकाता से दूर गंगा के डेल्टा में स्थित है। यह सुप्रसिद्ध रायल बंगाल टाइगर के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ स्टीमर द्वारा भी पहुँच सकते हैं।

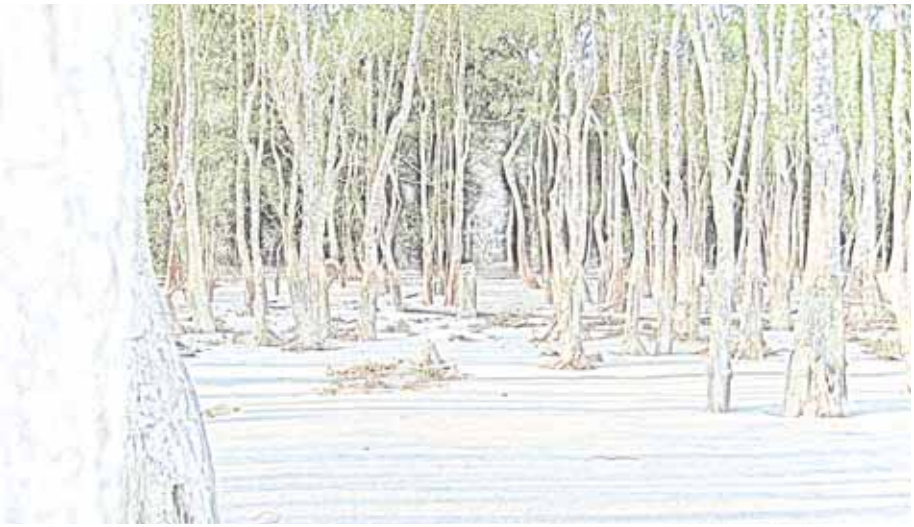

12. **मालदा गौड़** – कोलकाता से मालदा 349 किलोमीटर है। यह आमों के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ से 13 किलोमीटर दूर गौड़ है जो कभी गौड़ और पाल राजाओं की राजधानी रही है। इन खंडहरों में अभी भी 70 फीट ऊँचा दक्षिण दरवाजा और बारह दरवाजों वाला बारहआटी मस्जिद देखने लायक है।

13. **शान्ति निकेतन** – इस शान्त स्थान पर श्री देवेन्द्र नाथ टैगोर ने 1863 में एक आश्रम बनाया था। 1901 में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इस आश्रम में एक खुले स्कूल की स्थापन की। आगे चल कर वह स्कूल 'विश्व भारती' विश्व विद्यालय बना। यह भारतीय संस्कृति कला व पश्चिमी शैली के शिक्षण का अनुपम मिश्रण बना। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपना अधिकतर समय यहीं बिताया। यह कोलकाता से 200 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक टूरिस्ट लॉज भी है।

बाकुड़ा – विष्णुपुर – कोलकाता से विष्णुपुर करीब 150 किलोमीटर दूर है। यहाँ का टेराकोटा घोड़ा अपने विचित्र आकार के लिये चर्चित है। जो बाकुड़ा घोड़े के नाम से प्रसिद्ध है। ये घोड़े विभिन्न आकारों में लाल व काले रंगों में बनते हैं। इनके अतिरिक्त बैल, हाथी, लैम्प व गहने तथा मानव मूर्तियाँ भी टेराकोटा की

बनती हैं। विष्णुपुर 14 वीं शताबदी में राजा जगतमल की राजधानी बनी। राजा भगवान शिव के भक्त थे। 1611 ई. में बना मल्लेश्वर शिव मन्दिर प्रसिद्ध है। बाद के राजा विष्णु भक्त थे। 1643 में राजा रघुनाथ सिंह ने भगवान श्री कृष्ण का पाँच मंजिला श्याम राम मन्दिर बनवाया। यहाँ का जुड़वां जोरबाग मन्दिर भी प्रसिद्ध है। 1694 में राजा दुर्जन सिंह ने राधामोहन मन्दिर की स्थापना की। इन टेराकोटा मन्दिरों की दीवारें विभिन्न दृश्यों और मूर्तियों से सज्जित है। यहाँ का किला अब खंडहर है। किला परिसर में कई मन्दिर हैं जिनमें पिरामिड आकार का राजा हम्बीर का बनवाया भी है। किले में कई तोपें हैं जिनमें जंग नहीं लगती है। आवास हेतु कई निजी होटलों के अतिरिक्त प. बंगाल पर्यटन का पर्यटक आवास भी है।

14. **दार्जिलिंग** – कोलकाता से दार्जिलिंग 677 किलोमीटर है। अंग्रेजों के समय यह बंगाल की गर्मियों की राजधानी थी। दार्जिलिंग सड़क, रेल व हवाई यात्रा से जुड़ा है। न्यू जलपाई गुड़ी से छोटी ट्रेन द्वारा यात्रा

अत्यन्त सुखद है। यह एक सुन्दर हिल स्टेशन है जहाँ प्रकृति की शोभा, हिमालय पर्वत के मनोहारी दृश्य व चाय बागान का आनन्द ले सकते हैं। इस खूबसूरत पर्वतीय प्रदेश को मैदानी इलाके से जोड़ने वाली देश की सबसे पुरानी छोटी लाइन की ट्रेन है। यह दार्जिलिंग आने वाले देशी व विदेश पर्यटकों का मुख्य आकर्षण है। न्यू जलपाइगुड़ी से दार्जिलिंग का 87.48 किलोमीटर की यात्रा करने में इस ट्रेन को लगभग आठ घंटा लगता है। सम्पूर्ण भारत में न्यू जलपाईगुड़ी एक मात्र स्टेशन है, जहाँ ब्रॉडगेज, मीटरगेज व नैरोगेज, तीनों लाइनें मौजूद हैं। रास्ते में दुनिया का दूसरा सबसे ऊँचा स्टेशन घूम 7407 फीट की ऊँचाई पर है। घूम के आगे बतासिया लूप आकर्षण का केन्द्र है। यहाँ ट्रेन वृत्ताकार लूप का चक्कर लगाती है और पर्यटक लूप व कंचनजंघा पहाड़ की मनोरम चोटियों का आनन्द लेते हैं। इस ट्रेन को ऐतिहासिक धरोहर का दर्जा यूनेस्को द्वारा प्राप्त है। यह रेललाइन करीब 130 साल पुरानी है। दार्जिलिंग में बादलों की शोभा देखते ही

बनती है। यहाँ के दर्शनीय स्थानों में घूम मानास्ट्री, रंगीत वैली रोपवे, बोटानिकल गार्डेन, हिमालयन माउन्टेनरिंग इंस्टीट्युट, पीस पगोड़ा व टाइगर हिल दर्शनीय है। टाइगर हिल से सूर्योदय का नजारा देखने प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में पर्यटक जाते हैं।

15. **मिरिक** – घूम से करीब 40 किलोमीटर पहले मिरिक आता है। यह एक अपेक्षाकृत शान्त हिल स्टेशन है जहाँ पर्यटक दार्जिलिंग के भीड़–भाड़ से बचते हैं। यहाँ पर्यटक चाय बागान, संतरों के बगीचे, तेज पत्ता के पेड़ों व सुमेन्द लेक का आनन्द उठाते हैं।

16. **कर्सियांग** – न्यु जलपाईगुड़ी से दार्जिलिंग के रास्ते में कर्सियांग रेलवे स्टेशन आता है। यह भी पर्यटकों को आकर्षित करता है। यहाँ एक मृग पार्क व फॉरेस्ट म्यूजियम के अतिरिक्त चाय बगान भी हैं। अप्रैल के मौसम में यहाँ आर्किड फूलों की बहार देखते ही बनती है। यह दार्जिलिंग से 32 किलोमीटर दूर है और न्यु जलपाई गुड़ी से 48 किलोमीटर दूर है।

कालिम्पोंडा – यह दार्जिलिंग से 60 किलोमीटर दूर सिक्किम के सीमा पर स्थित एक सुन्दर पर्वतीय शहर है। यहाँ फूलों की नर्सरी व मोनास्टरी है। यहाँ दार्जिलिंग से पर्यटन निगम द्वारा संचालित टूर की व्यवस्था है। कालिम्पोंग में आर्किड फूलों की सजावट देखते ही बनती है। पास ही में देओलो हिल एक पिकनिक स्थल और सूर्योदय का दृश्य देखने के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ आवास हेतु पर्यटक भवन है।

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र

भारत के पश्चिमी क्षेत्र में स्थित महाराष्ट्र देश का एक प्रमुख भाग है। महाराष्ट्र की राजधानी मुम्बई देश की आर्थिक राजधानी कही जाती है। पर्यटन की दृष्टि से यहां के समुद्र तट, ऐतिहासिक किले, धर्मस्थान व गुफाएँ प्रसिद्ध हैं। इस प्रदेश में तीन ज्यातिर्लिंग हैं।

मुम्बई दिल्ली से 1408 किलोमीटर है। यह देश के सभी भागों से रेल, सड़क व वायु मार्ग से जुड़ा है। इसे देश की आर्थिक राजधानी होने का गौरव प्राप्त है। यह महाराष्ट्र की राजधानी है। समुद्र से घिरा होने के कारण यहां न तो अधिक गर्मी पड़ती है न अधिक सर्दी। आवास हेतु यहां पांच सितारा होटलों के अतिरिक्त छोटे बड़े सैकड़ों होटल हैं।

मुम्बई के दर्शनीय स्थलः-

1. **गेट वे ऑफ इन्डियाः**– यह करीब 80 फीट उंचा पत्थर का मेहराब नुमा इमारत मुम्बई के समुद्र तट पर बना है। इसे 1911 में जार्ज पंचम व महारानी मेरी के स्वागत हेतु बनाया गया था। इसके पास दो छत्रपति शिवाजी व स्वामी विवेकानन्द की मूर्तियां स्थित हैं। गेट वे ऑफ इंडिया के साथ पत्थरों के बैंच बने हैं जिन पर दर्शक बैठ कर समुद्र के हलचल का आनन्द लेते हैं। इसी स्थान से एलीफैन्टा गुफाओं में जाने हेतु मोटर बोट मिलती हैं।

2. **विक्टोरिया टर्मिनसः**– इस रेलवे स्टेशन से भारत का पहला ट्रेन मुम्बई से थाणे तक 1853 में चला था। यह गोथिक ढंग का एक विशाल भवन है। इस भवन के ऊपर करीब 7 फीट व्यास की घड़ी लगी है। इस का नया नाम छत्रपति शिवाजी टर्मिनस है।

3. **मुम्बई नगरपालिका भवन**– यह विशाल भवन भी गोथिक कला का सही आकार का है। यह मुम्बई नगरपालिका का मुख्यालय है और विक्टोरिया टर्मिनस के पास है।

4. **मेरीन ड्राइम**:– मुम्बई का हृदय स्थल है। यह समुद्र तट के किनारे अर्द्ध चन्द्राकार दीवार गेट वे ऑफ इन्डिया से लेकर चौपाटी बीच तक बना है। सायंकाल यहां हजारों व्यक्ति इस पर बैठकर समुद्र की ताजी हवा का आन्नद लेते हैं।

5. **चौपाटी बीच**:– इस बीच के बालू पर सैलानी लोगों की भीड़ होती है। हर प्रकार की खाने पीने की वस्तुएं विक्रय होती हैं। यह एक आनन्ददायक पिकनिक स्थल है। यहां बच्चों के मनोरंजन के अनेकों साधन हैं। चौपाटी पर सरदार वल्लभ भाई पटेल और लोकमान्य तिलक की मूर्तियां भी स्थापित हैं।

6. **राजाबाई टावर**:– यह 19वी सदी का बना गोथिक टावर मुम्बई वि.वि. के अन्दर बना है। यह लगभग 240 फीट ऊंचा है तथा स्तम्भ के ऊपरी भाग में घड़ी लगाई गई है।

7. **माशी भवन**:– महात्मा गांधी मुम्बई में इसी भवन में ठहरते थे। 1932 में यही से वे गिरफ्तार किए गए थे। इस भवन में अब उनसे सम्बन्धित चित्रों की गैलरी एवं एक अनुसन्धान केन्द्र है। दर्शकों के लिये प्रतिदिन सुबह 930 से 1800 तक खुली रहती है।

8. **मलाबार हिल**:– यह मुम्बई का सबसे महंगा क्षेत्र चौपाटी के पास एक पहाड़ी है। मुम्बई के सभी धनी व प्रसिद्ध लोगों के घर यहीं हैं। मुम्बई के मुख्य मन्त्री का सरकारी बंगला भी इसी पहाड़ी पर है। इसी पहाड़ी पर बालकेश्वर मन्दिर के खंडहर हैं।

9. **कमला नेहरू उद्यानः**– यह बच्चों का उद्यान 1952 में बनाया गया जवाहर लाल नेहरू की पत्नी कमला नेहरू के नाम से जाना जाता है। इस उद्यान से चौपाटी और सम्पूर्ण मेरीन ड्राइव का विंहगम दृश्य दिखता है।

10. **फीरोजशाह मेहता उद्यानः**– यह उद्यान भी मलाबार हिल पर कमला नेहरू उद्यान के सामने सड़क की दूसरे किनारे पर बना है। मुम्बई की पानी की आपूर्ति वाले विशाल टैंक के ऊपर यह उद्यान 1881 में बना। इसका पुराना नाम है किंग गार्डन है। इस उद्यान की विशेषता है कि झाड़ियों को विभिन्न जानवरों की शक्ल में काटा गया है।

11. **जैन मन्दिरः**– मलाबार हिल पर संगमरमर का यह मन्दिर 1904 में बना प्रथम जैन तीर्थकर आदिनाथ का है। मंदिर की दीवारों पर सुन्दर चित्रकारी की गई है। मंदिर की दूसरी मंजिल पर पार्श्वनाथ की काले संगमरमर की मूर्ति है।

12. **महालक्ष्मी मन्दिरः**– यह मुम्बई का प्रमुख हिन्दु मंदिर है। समुद्रतट पर बना यह मंदिर 18वीं सदी का है। मन्दिर में महालक्ष्मी के अतिरिक्त महाकाली और महा सरस्वती की मूर्तियां हैं।

13. **सिद्धी विनायक मन्दिरः**– यह गणेश जी का मन्दिर प्रभादेवी में है। इसकी महिमा में सभी मुम्बई वासियों की श्रृद्धा है।

14. **मुम्बई देवी मन्दिरः**– मुम्बई देवी का मन्दिर ईसा पूर्व प्रथम सदी का है। यह उस स्थान पर था जहां अभी छत्रपति शिवाजी टर्मिनस है। इसे अंग्रजों ने 1739 में तोड़ डाला था। इस मन्दिर को कालबा देवी में 1753 में फिर बनाया गया।

15. **सूर्यनारायण मन्दिरः**– सूर्य भगवान का यह मन्दिर भूलेश्वर में है। 1899 में बना पर मन्दिर सफेद पत्थरों का है। प्रवेश द्वार पर जय–विजय की मूर्तियां हैं। गर्भ गृह में सूर्य भगवान की रथ पर सवार मूर्ति है। जिसमें 7 मुख वाला घोड़ा जुता है। मन्दिर में अनेकों अन्य देवी देवताओं की मूर्तियां हैं।

16. **बाबुल का मन्दिरः**– यह मन्दिर मलाबार हिल के दक्षिण में है। यह शिव मन्दिर 1780 का बना है। इसमें काले पत्थर का शिवलिंग है।

17. **भोलेश्वर मन्दिरः**– यह मन्दिर भी शिव को समर्पित है। मन्दिर 200 साल से भी अधिक पुराना है।

18. **टावर आफ साइलेन्सः**– मलाबार हिल पर पारसियों का शवगृह है। जहां मृत पारसिवों के शवों का अन्तिम संस्कार उनके धर्म के अनुसार किया जाता है।

19. **सेंट जॉन चर्चः**– 1847 का बना यह चर्च अत्यन्त आकर्षक है। गोथिक महराबों और स्टेन ग्लास से सुसज्जित खिड़कियां इसको एक मोहक सुन्दरता देती है। इसे अफगान चर्च भी कहते है।

20. **हाज़ी अली मस्जिदः**– यह समुद्र के अन्दर बना मस्जिद है। यही पर हाजी अली का मकबरा भी है।

21. **राउदत तोहराः**– दाउदी तोहरा सम्प्रदाय के आध्यात्मिक गुरू सैयदना ताहर सैफुदीन की याद में बना संगमरमर का मस्जिद और मकबरे में चांदी के चार दरवाजे हैं मस्जिद की भीतरी दीवारों पर सोने से कुरान की आयतें लिखी गई हैं।

22. **तारापोरवाला जलजीव केन्द्रः**– मेरिन ड्राइन पर इस जलजीव केन्द्र में अनेकों जलजीवों को रखा गया है। दर्शकों का यह मनभावक केन्द्र है।

23. **जहांगीर आर्ट गैलरी**:– सर कालस जी जहांगीर ने इस आर्ट गैलरी की स्थापना 1952 में की थी। यहां प्राय पूरे वर्ष भर भारतीय कलाकारों की चित्र प्रदर्शनी आयोजित होती रहती है।

24. **प्रिन्स आफ वेल्स संग्रहालय**:– यह संग्रहालय जहांगीर आर्ट गैलरी के समीप ही है। इसमें कला, पुरातत्व और प्राकृतिक इतिहास का अद्‌भुत संग्रह है। यह संग्रहालय देश के सर्वोत्तम संग्रहालयों में से एक है।

25. **वीरमाता जीजाबाई भोंसले उद्यान**:– इस सुन्दर उद्यान में हाथी की सवारी, ऊँट की सवारी पोनी की सवारी और नौका विहार की सुविधा है। इस उद्यान के भीतर विक्टोरिया व अलवरे संग्रहालय है जिसमें मुम्बई का इतिहास, फोटो, पेंन्टिग चार्ट आदि के द्वारा दिखाया जाता है।

26. **हुतात्मा चौक**:– इसका पुराना नाम फ्लोर फाउन्टेन है। यह चौक मुम्बई की धड़कन है। इस चौराहे के बीच अत्यन्त आकर्षक फ्लोर फाउन्टेन है। सन 1869 का बना यह फव्वारा रोमन शिल्प का है। इसके चारों तरफ व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के कार्यालय, बैंको के मुख्यालय प्रकाशकों, वकीलों आदि के कार्यालय व भवन हैं।

27. **नेहरू प्लेनेटोरियम**:– यह वर्ली में बना प्लेनेटोरियम ग्रह आदि के विषय में बताता है इसके पुस्तकालय में ज्योतिष व खगौल विज्ञान के पुस्तकों का अच्छा संग्रह है।

28. **नेहरू विज्ञान केन्द्रः**– यह नेहरू प्लेनेटोरियम के बगल में है। इसमें बच्चों को विज्ञान से अवगत कराया जाता है।

29. **इस्कॉन मंदिरः**– जुहू तट के समीप इस्कॉन मंदिर है। मंदिर अत्यन्त सुन्दर है।

30. **जुहू बीचः**– अरब सागर के किनारे यह बीच दर्शनीय है। लम्बे रेतीले समुद्र तट पर घूमने के अतिरिक्त लोग ऊँट, घोड़े की सवारी, बंदर का नाच पिकनिक आदि से अपना मनोरंजन करते हैं।

31. **संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यानः**– मुम्बई से 35 किलोमीटर दूर उपनगर बोरिबली स्टेशन के पास संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान है। यहां की लायन सफारी, खिलौना ट्रेन सभी के मनोरंजन का साधन है। यहां बन्द जीप से उद्यान में स्वछन्द रूप से घूमते शेरों, चीतों आदि को देखा जा सकता है। इसमें एक गांधी स्मृति मन्दिर भी बना है।

32. **कन्हेरी गुफाएंः**– सजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान से 4 किलोमीटर दूर कन्हेरी गुफाएं है। कुल 109 गुफाएं है। इनका निर्माण 2 शताब्दी का है। यह बौद्ध धर्मावलंबियों का निवास स्थान था। इन गुफाओं का शिल्प प्रभावकारी है।

33. **इस्सेल वर्ल्डः**– बोरीबली के निकट गोराई द्वीप पर यह एक मनोरंजन पार्क है। 60 एकड भूमि में फैले अनेकों खेल, तमाशों व पानी के खेलों का आनन्द लिया जा सकता है। पार्क में प्रवेश शुल्क लगभग 500 रू. है। गोराई टापू पर ठहरने हेतु कई कॉटेज हैं।

34. **विपासन्ना पगोडाः**– एक्सेल वर्ल्ड के समीप 14 एकड़ भूमि पर विपासन्ना पगोडा बना है। इस पगोडा पर 21.5 फीट ऊंची बुद्ध की प्रतिमा है। प्रतिमा का वजन 60 टन है। इसे एक ही संगमरमर के पत्थर से तराशा गया है। प्रतिमा का वनज 60 टन है।

35. **जोगेखरी गुफाएंः**– जोगेश्वरी स्टेशन के नजदीक में गुफाएं है। यही पास में फैन्टेसी लैंड है जहां बच्चों के मनोरंजन की अनेक वस्तुएं हैं।

36. **गोराई व मनेरी तटः**– ये सुन्दर समुद्रतट मुख्य मुम्बई के करीब एक छोटे टापू पर है। यहां ट्रेन, बस, ऑटो और तांगे की सवारी से आ सकते है। इन तटों के खूबसूरत रेत पर मौज मस्ती कर सकते है। यहा ठहरने हेतु कॉटेज उपलब्ध है।

37. **आक्साः**– मुम्बई से करीब 40 किलोमीटर दूर मलाड के पास आक्सा तट है। यहां से सूर्यास्त का सुन्दर नजारा दिखता है।

38. **मड आइलैंडः**– आक्सा तट के पास ही मड आइलैंड है। इस सुन्दर स्थान की सुन्दर उद्यानों और अन्य स्थलों का दर्शक आनन्द लेते है। यहां प्रायं फिल्मों की शुटिंग होती रहती है। यहां का बीच सुन्दर है।

39. **सरंगल तटः**– आक्सा से 405 किलोमीटर दूर एक छोटी पहाड़ी की तलहटी में सरगंल तट है। यह एक सुन्दर तट है। यहां एक प्राचीन किले के अवशेष भी है। यहां होटल वैलेरिना में पर्यटक निवास कर सकते है।

40. **एलीफैन्टा गुफाएं**:– ये गुफाएं मुम्बई से 10 किलोमीटर समुद्र के अन्दर एक पहाडी टापू पर है। यहां गेट वे ऑफ इन्डिया से स्वीमर से जाते है। यहां पहाड़ों की चट्टानों को काटकर विभिन्न गुफाओं में विभिन्न देवी देवताओं की मूर्तियां बनी हैं। यह 6–7 वी शताब्दी का बना है। मुख्य गुफा विशाल स्तम्भों पर स्थित है। इनमें विभिन्न देवी देवताओं की प्रतिमाएं है। सबसे सुन्दर विशाल 18 फीट ऊंची त्रिमूर्ति शिव की प्रतिमा है। खाने पीने की भी व्यवस्था है। गुफा के अन्दर एक मीठे जल का जलाशय भी है।

41. **अम्बरनाथः**– मुम्बई से 70 किलोमीटर दूर अम्बरनाथ में 11वीं सदी का चालुनाथ राजाओं का बनाया शिव मन्दिर है।

42. **बसीन का किलाः**– मुम्बई से करीब 82 किलोमीटर दूर 15वीं शताब्दी का पुर्तगालियों के बनाएं किले के अवशेष है।

43. **करनाल पक्षी अभयारण्यः**– मुम्बई से 61 किलोमीटर दूर मुम्बई गोवा रोड पर स्थित इस पक्षी अभ्यारण्य में अनेकों प्रजातियों के पक्षी निवास करते हैं। धुमंतू पक्षी भी आते जाते रहते हैं। समीप ही एक किले का अवशेष है।

44. **ब्रजेश्वरी गर्म जल कुन्डः**– मुम्बई से 88 किलोमीटर पर प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर ब्रजेश्वरी में गर्म जल के झरने है। यहां ब्रजेश्वरी मन्दिर है।

45. **लोनावाला खंडालः** मुम्बई से 101 किलोमीटर दूरी पर लोनावाला प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर एक उत्तम स्थान है। सहयादि पर्वत माला के पश्चिमी घाट की उतराई में बसा खंडाला और लोनावाला मुम्बई पुणे मार्ग पर स्थित रमणीक पर्वतीय नगर है। पहले खंडाला और 5 किलोमीटर बाद लोनावाला है। यहां ट्रेन से भी जा सकते हैं। दोनों नगर अपने प्राकृतिक सौंदर्य के कारण पर्यटकों में अत्यन्त लोकप्रिय हैं। वर्षा ऋतु में इनकी सुन्दरता बढ़ जाती है। पर्वत से निकलते झरनों, बादलों से भरा आसमान पृथ्वी की हरियाली सभी कुछ मनमोहक है। खंडाला छोटा एवं शान्त वातावरण वाला है। लोनावाला में अनेक दर्शनीय स्थल हैः लवर्स प्वाइन्ट, टाइर्गस लीप, हार्स शू वैली, भूसी डैम इत्यादि। भूसी डैम के पास अत्यन्त सुन्दर जल प्रपात है। लोनावाला से 15 किलोमीटर दूर प्राकृतिक मोहक वातावरण में एक सुन्दर झील है।

46. **कारला गुफाएंः**– इस पुरातन गुफा का निर्माण कालर इ.प्र. 160 वर्ष बताया जाता है। इस गुफा के अन्दर भारत को सबसे विशाल चैत्य बना है। गुफा 124 फीट लम्बी और 48 फीट चौड़ी है। गुफा की छत 124 फीट ऊंची है। इस गुफा में स्तम्भों पर उकेरी गई कलाकृतियों का शिल्प आकर्षक है। गुफाओं की बुद्ध कालीन मूर्तिया अत्यन्त आकर्षक है।

यहां पर लकड़ी का बना एक मन्दिर है। इस मन्दिर में अनेकों भित्ति चित्र है। प्रवेश द्वार पर चारों दिशाओं में चार शेरों की आकृतियां है। मन्दिर में एक विशाल शिव प्रतिमा है। इसमें प्रवेश के 16 द्वार हैं। यह लोनावाला से 10 किलोमीटर दूर है।

47. **भाजे गुफा**:– कारला गुफा से 2 किलोमीटर दूर भाजे गुफाएं है। कुल 18 गुफाओं में 12 न. की गुफा सबसे अच्छी है। इसमें 18 स्तम्भ हैं। गुफा में 14 स्तूप हैं। एक गुफा में युवराज को हाथी पर तथा अन्य को रथ पर दिखाया गया है। गुफा के पहाड की ऊंचाई 3 किलोमीटर है।

48. **बेडसा गुफा**:– बेडसा में 2 गुफाएं है जो 10वी शताब्दी का बना है। ये गुफाएं 1000 फीट ऊंचे सुपति पहाड पर है। पहली गुफा दो आधार स्तम्भो पर है। गुफा के एक ओर स्त्री पुरूष एवं पशुओ के सुन्दर भित्ति चित्र है। स्त्री पारदर्शक वस्त्र पहने और सम्पूर्ण श्रृंगार कर अश्व पर सवार है। गुफा 20 फीट चौडी और 45 फीट ऊंची है। दूसरी गुफा 18 फीट चौड़ी व 32 फीट ऊंची है। ये गुफाएं लोनावाला से 5 किलोमीटर की दूरी पर है।

50. **लोहगढ**:– यहां एक किले का अवशेष है परन्तु यहां का आकर्षण वे पहाड़ी झरने हैं जो पर्यटकों का मन मोह लेते है। आवास म.प्र. निगम का हॉलोडे रिसौर्ट है।

कर्नाटक

कर्नाटक

कर्नाटक का गौरवशाली इतिहास रहा है। चालुक्य वंश के शासको ने नर्मदा से कावेरी तक फैली इस विशाल भूखंड की हरियाली से आच्छादित पहाडो, बलखाती नदियों, झरनों से भरपुर 320 किलोमीटर लम्बी अरब सागर तट लिये हुये प्रदेश पर गौरवशाली शासन दिया। बाद में विजयनगर साम्राज्य ने प्रदेश के महत्व को और भी गौरवशाली बनाया।

बंगलौर

बंगलुरू, बंगलौर का नया नाम है। यहां कर्नाटक प्रदेश की राजधानी और भारत का चौथा सबसे बडा नगर है।

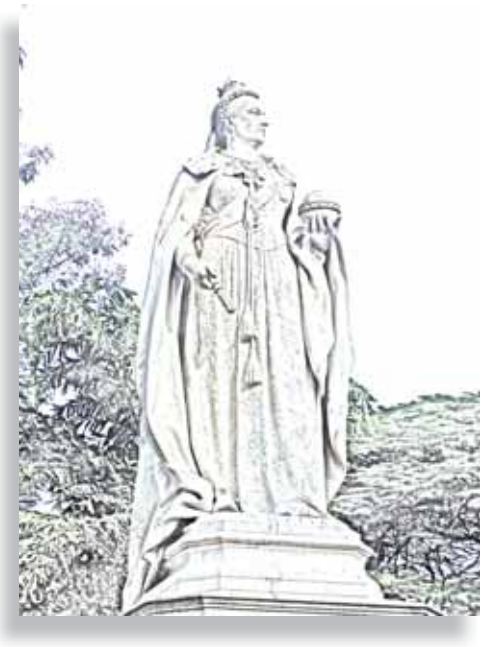

यह नगर देश के सभी भागो से रेल, सडक व वायु मार्ग से जुडा है। यह दिल्ली से 2434 किलोमीटर मुम्बई से 1156 किलोमीटर तथा कलकता से 2025 किलोमीटर की दूरी पर है।

यह नगर प्राकृतिक सौन्दर्य, प्राचीन परम्परा और आधुनिकता का अनोखा संगम है। पर्यटन की दृष्टि से यह नगर ही नही अपितु सम्पूर्ण कर्नाटक राज्य आकर्षण का केन्द्र रहा है।

भारत को सिलीकौन वैली कहे जाने वाला यह नगर अपनी भव्य स्थापत्य कला और सुंदर उद्यानों से भरा पूरा है।

इस नगर की स्थापना विजय नगर के प्रसिद्ध सेनापति कैमगोडा ने 1537 में की और नगर के चारो कोणों पर चार मीनारे बनाई।

दर्शनीय स्थलः-

1. **कब्बन पार्कः**– यह पार्क 1864 में बना सैकडो एकड में फैला है। इस उद्यान की हरी मखमली घास और विभिन्न प्रकार के विभिन्न रंगो की सजी फूलों की सज्जा आकर्षक है। यह विशाल बाँसों के लिये भी प्रसिद्ध है।

2. **लाल बागः**– 240 एकड में फैले इस उद्यान का निर्माण 1760 में हैदर अली ने करवाया था। इस उद्यान में हजारो प्रजातियों के पेड पौधे हैं। यह देश के महत्वपूर्ण वनस्पति उद्यानों मे से एक है। उद्यान में एक ग्लास हाउस, लाल फव्वारे और गुलाब के बाग भी है। इसमें 22 फीट व्यास की एक विशाल घड़ी भी है।

3. **विधान सौदाः**– यह भवन लगभग 650 फीट लम्बा, 320 फीट चौडा और 140 फीट उचां, ग्रेनाइट पत्थरों का 5 मंजिला भव्य भवन है। यह कर्नाटक राज्य का विधान सभा भवन है। इस भवन में अनेकों गुम्बद, स्तमभ और मेहराव हैं। यह भवन अत्यन्त आकर्षक है।

4. **टीपू का महलः**– कैम्पगोंडा ने 1537 ई. में इस किले एवं महल का निर्माण करवाया था। इसे 18वीं सदी में टीपू ने मरम्मत करवाया। इसकी स्थापत्य कला उत्कृष्ट है। किले की प्रथम मंजिल पर एक संग्रहालय भी है। किले के अन्दर गणपति का एक मन्दिर भी है। यह टीपू का गर्मियों का महल था।

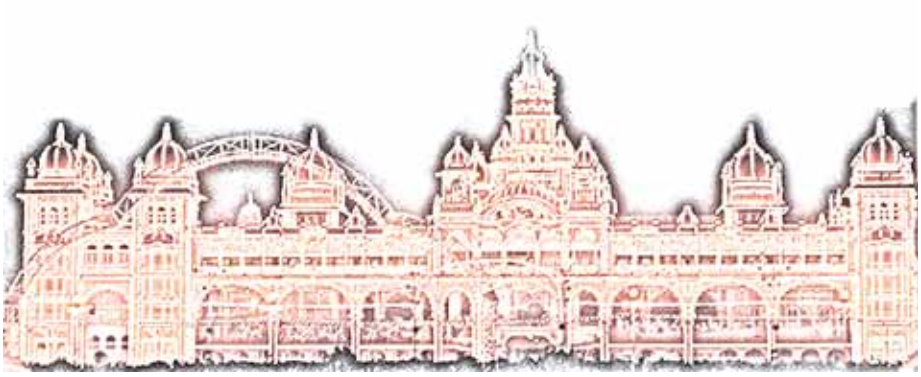

5. **बेकटरामन मन्दिरः**– किले के पास 300 साल पुराना बेकटरामन मन्दिर है जिसके स्तम्भ अभी भी अंग्रेजों और टीपू सुल्तान के युद्ध के प्रत्यक्ष गवाह है।

6. **नन्दी मन्दिरः**– इस मन्दिर में एक ही पत्थर से बनी 20 फीट लम्बी और 13 फीट ऊंची प्रतिमा है। मन्दिर 16वीं सदी का बना है। इस मन्दिर के पास ही गणेश जी का मन्दिर है। इस मन्दिर में गणेश जी की प्रतिमा प्रति चार वर्ष पर 110 किलोमीटर मक्ख से बनाई जाती है। यह प्रतिमा मक्खन का होते हुये भी पिघलता नहीं है। 4 वर्ष के बाद इस प्रतिमा के मक्खन को भक्त जनों में वितरित कर दिया जाता है और नई प्रतिमा बनाई जाती है।

7. **उलसूर झीलः**– यह झील लगभग 1.5 वर्ग मील में फैला है। इसमें कई छोटे छोटे टापू भी हैं। नौकायन की सुविधा है। झील के किनारे अरविन्द आश्रम है जहां योग आदि की शिक्षा दी जाती है। झील में तैराकी की भी सुविधा है।

8. **गावीपुरम गुफा मन्दिरः**– इस शिव मन्दिर को कैम्पगोडा ने बनवाया था। मन्दिर का शिल्प अत्यन्त उच्च कोटि का है। मन्दिर चार स्तम्भों पर आधारित है। इन स्तम्भों पर सुन्दर कला कृतियां उकेडी गई है। मन्दिर निर्माण की विशेषता है कि प्रति वर्ष 14 जनवरी को सूर्य की किरणे शिव मन्दिर के नन्दी की प्रतिमा के सींगो के मध्य से होती हुई शिवलिंग पर सायं काल 5 से 6 बजे तक पडती है। उस समय के उत्कृष्ट वास्तु शिल्प का यह अद्‌भूत नमूना है।

9. **सेंट मेरी चर्चः**– बंगलुरू के शिवाजी नगर में 16वी शताब्दी का बना यह चर्च नगर का सबसे पुराना चर्च है। इसे 1832 में वर्तमान स्वरूप दिया गया।

10. **हनुमान मन्दिरः**– यह मन्दिर आधुनिक काल का है और गुफा मन्दिर के निकट है। इस मन्दिर के छत पर श्री राम की हनुमान को गले लगाते हुए प्रतिमायें हैं जो 31 फीट ऊंची है।

11. **नन्दी पहाडीः**– बंगलुरू से 60 किलोमीटर दूर नन्दी की पहाडी करीब 4500 फीट की ऊंचाई पर है। इसी पहाडी के खुशनुमा वातावरण में टीपू सुल्तान का

ग्रीष्मकालीन आवास स्थान है। इस पहाडी पर अनेकों मन्दिर है। जिन की शिल्प कला उच्चकोटि की है। इन्ही में 1 हजार साल पुराना शिव मन्दिर भी है। पहाडी के खुशनुमा वातावरण का आनन्द लेने के लिए यहां कई कॉटेज, होटल भी बने है।

बंगलूरू महलः– यह महल बादियार राजाओं ने अपने निवास हेतु बनवाया था। यह रूडर शैली का महल 4000 वर्ग फुट में फैला है।

12. **संग्रहालयः**– कस्तूरबा रोड पर बब्बन याई से आगे यह प्राचीन सग्रहाल है। यहां वस्तुये संग्रहित है।

13. **बाल भवनः**– बच्चो के मनोरंजन हेतु इस भवन परिसर में खिलौना ट्रेन, धुडसवारी, सिनेमा, नौकायान आदि की सुविधा है। यहां बच्चे आनन्द मनाते है। भवन में एक एक्वेरियम भी है।

14. **शिवगंगाः**– बगंलुरू से 60 किलोमीटर दूर यह पहाडी समुद्रतल से 4000 फीट की ऊंचाई पर है। इस पहाडी का आकार विचित्र है। पूर्व से देखने पर यह नन्दी जैसा दिखता है। पश्चिम से देखने पर यह गणेश जैसा, दक्षिण से देखने पर वृहत शिवलिंग जैसा और उतर से देखने पर फन फैलाए विशाल सर्प जैसा दिखता है। पहाडी पर अनेकों मन्दिर हैं जिसमें गंगाधिखर मंन्दिर प्रसिद्ध है।

15. **वनेरघटा राष्ट्रीय उद्यानः**– बंगलुरू से 20 किलोमीटर दक्षिण 104 वर्ग किलोमीटर में फैले इस राष्ट्रीय उद्यान में अनेको पशु पक्षी रहते है। यहां स्मायन सफारी की भी सुविधा है।

यहां आवास हेतु प्रत्येक वर्ग की सुविधा हेतु अनेको छोटे बड़े होटल है। कर्नाटक प्र.वि.नि. के होटले भी है और निगम की बसें प्रत्येक भ्रमणशील स्थानों की सैर कराती है।

16. **सावनादुर्गः**– यह बंगलुरू से 58 किलोमीटर दूर एक पहाडी पर बना छोटा सा दुर्ग है। यह राजा केम्पगोडा का एक प्रसिद्ध दुर्ग था। दुर्ग में नरसिंह भगवान का एक मन्दिर भी है।

17. **रामोहल्लीः**– बंगलूरू से 28 किलोमीटर दूर इस स्थान पर 3 एकड़ में फैला पीपल का एक विशाल पेड है। जो 400 साल पुराना है। इस विशाल पेड को देखने हजारों पर्यटक आते हैं। यह एक पिकनिक स्थल भी है।

18. **मागदीः**– यह नगर बंगलुरू से 91 किलोमीटर दूर है। जिसे चोल राजाओं ने बनाया था। प्रसिद्ध राजा केम्पगोडा का जन्म यही हुआ था। इस स्थान पर राजाओं ने एक किला और अनेकों मन्दिर बनवाये जिनकी वास्तुकला अनुपम है।

19. **महालक्ष्मीपुरम हनुमानः**– एक ही विशाल ग्रेनाइट पत्थर से 22 फीट ऊंची और 6 फीट चौडी हनुमान जी की विशाल मूर्ति हाथों पर पर्वत उठाये बनी है। मूर्ति दर्शनीय है।

20. **सफेद मैदानः**– बंगलुरू से करीब 20 किलोमीटर दूर यह श्री सत्य सांई का आश्रम है।

21. **महर्षि रमण आश्रमः**– यह आश्रम मेरवरी सर्किल के पास स्थित है। दक्षिण में महर्षि रमण प्रख्यात ऋषि मानें जाते हैं। इस आश्रम का ग्रेनाइट का बना हाल इतना बडा है कि करीब 300 भक्त एक साथ बैठ सकते हैं।

22. **जुमा मसजिद**:– तारामडलपेट क्षेत्र में स्थित यह मस्जिद शहर की सबसे पुरानी मस्जिद है। ग्रेनाइट के लम्बे स्तम्भों वाली इस मस्जिद की दीवारो पर अच्छी शिल्पकारी है।

मैसूर

बंगलूरू से 140 किलोमीटर दूर, समुद्रतल से 2300 फीट ऊंचा मैसूर एक सुन्दर नगर है। यह पहले वाडियार राजाओं की राजधानी थी। पूरा नगर चन्दन, चमेली और गुलाब की खुशबू से भरा है। जो नगर के बागो की देन है। यहां भी चन्दन की लकड़ी की नक्काशीवार वस्तुएं और सिल्क की साड़ियां प्रसिद्ध हैं।

दर्शनीय स्थल:

1. **महाराजा पैलेस**:– यह वाडियार राजाओं का महल था। ग्रेनाइट पत्थरों से बना यह सुन्दर महल 5 किलोमीटर में फैला है। महल के गुबंद सोने से मढे है। महल के मेहराबदार दरवाजे और खंभे आकर्षक है। महल का दरबार हाल, कल्याण मंडप व आर्ट गैलरी भी दर्शनीय है। महल का विशाल प्रदेव द्वार पीतल का है। जिसमें हाथी जा सकता है। रात में पूरा महल बिजली से जगमगाता है। महल में कई सुन्दर मंदिर है।

2. **ललिता महल**:– सेफद रंग का यह महल 930 ई. का बना है। यहां राज्य के अतिथियों को ठहराया जाता था। वर्तमान में यह होटल है।

3. **जगमोहन पैलेस कला दीर्घा**:– यह पूराना राजमहल था। वर्तमान में यह संग्रहालय है। यहां की कला दीर्घा में राजा रविशंकर वर्मा और रोरिख की यादगार कृतियां भी संग्रहित हैं। टीपू सुल्तान की तलवार, हैदर अली की तलवार और शिवाजी के बंधनखा सहित अनेकों प्रकार की वस्तुए, चित्र गलीचे आदि संग्रहित है।

4. श्री **रगंपट्टनम**:– मैसूर से 14 किलोमीटर दूर यह हैदर अली और टीपू का किला व महल था अब खंडहर है। इसी किले में अपने सिपाहसालारों को धोखा देने के कारण टीपू सुल्तान अंग्रेजो से लड़ता मारा गया था। इस किले के बाहर टीपू की हाथीदांत की बनी समाधि है।

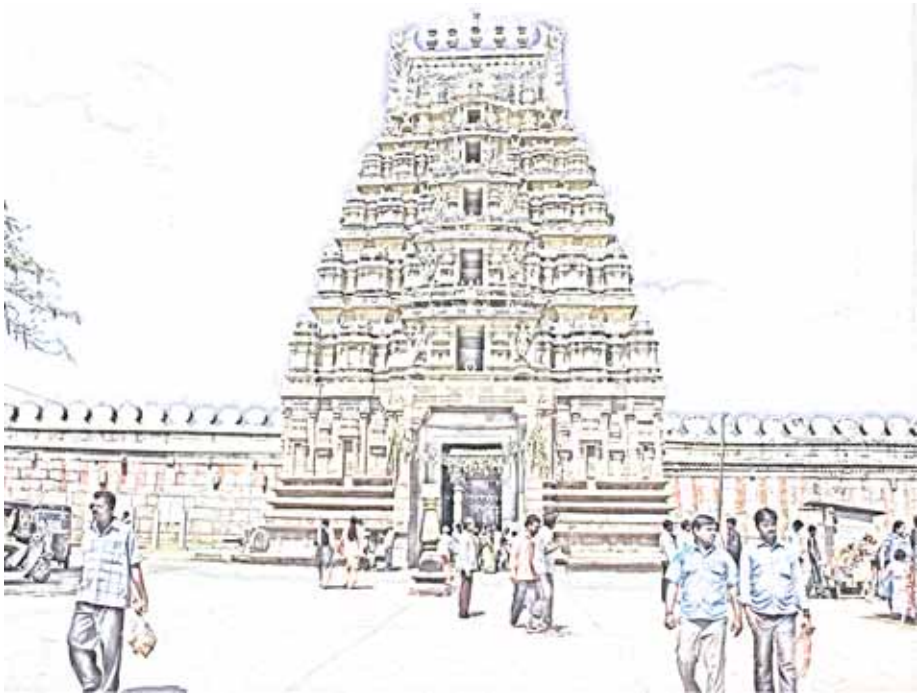

5. **वृन्दावन उद्यान**:– यह बेजोड़ उद्यान मैसूर से 19 किलोमीटर दूर है। यह 6 किलोमीटर के दायरे में फैला है। यह उद्यान अपने विशेष फौव्वारों के लिए प्रसिद्ध है जो रंगविरणी रोशनी से जगमाता रहता है। अतः रात में भी यह उद्यान उतना ही आकर्षक है जितना दिन में। यही पर कावेरी नदी पर कृष्ण राज सागर बाँध बना है जो 130 वर्ग किलोमीटर में फैला है।

6. **दतिया दौलत बाग**:– 1784 में बना यह बाग गर्मियों में सुकुन देता था। यहां का महल सागौन की लकड़ियों का बना स्थापत्य कला का सुन्दर नमूना है। वर्तमान में यह संग्रहालय है।

7. **पक्षी संरक्षित उद्यान**:– यह संरक्षित उद्यान श्री रंगपट्टनम से केवल 4 किलोमीटर दूर है। यहाँ अनेकों देशी व विदेशी पक्षी बसेरा बनाए हैं।

8. **बाँदीपूर राष्ट्रीय उद्यान**:– मैसूर से 80 किलोमीटर दूर उटाकमन्ड के रास्ते में नीलगिरी पर्वत की तराई व ऊंचाई पर स्थित इस राष्ट्रीय उद्यान में हाथी व शेर सहित अनेकों जानवर निवास करते हैं। यह क्षेत्र तमिलनाडू के मुदुमलाई वन और केरल के बाडनद वन क्षेत्र से जुडा है। निवास की व्यवस्था है।

9. **रेल म्यूजियम**:– मैसूर रेलवे स्टेशन के पास स्थित इस छोटे से संग्रहालय में तेल के पुराने डिब्बे आदि संग्रहित है।

10. **पशु उद्यान**:– यह उद्यान 37 एकड़ में फैला है और अनेको प्रकार के पशुओं का निवास स्थान है। यहां पर अनेको प्रकार के सांप भी हैं।

11. **चामुन्डा पहाड़ी**:– इस 3300 फीट ऊंची पहाड़ी पर चामुण्डेश्वरी का सुन्दर मन्दिर बना है। यह 1095 ई. का बना है। मंदिर का गोपुरम 7 मंजिला और 120 फीट ऊंचा है।

12. **हजार दीपोवाल लेक**:– चामुन्डा पहाड़ी के पूर्व में स्थित इस लेक में दीपोत्सव के अवसर पर हजारो दीप जलाये जाते हैं। इन दीपो की सुन्दरता को देखने हजारों पर्यटक यहां आते है।

13. **सोमनाथपुर**:– मैसूर से 40 किलोमीटर दूर सोमनायपुर में 1268 ई. में बने तीन मन्दिरों का समूह है जिसे त्रिकूट कहते है। यहां कावेरी और काविनी नदियों के संगम स्थल पर बने इन मन्दिरों की स्थापत्य कला बेजोड है। इन मंदिरों का निर्माण 1268 ई. में राजा नरसिंह ने करवाया था। इस मंदिर का प्रागंण 2.5 फीट लम्बा और 177 फीट चौड़ा है। मन्दिर भगवान विष्णु को समर्पित है। मंदिर में गणेश की नृत्य मुद्रा में, देवी सरस्वती, शिव, बाराह और इन्द्र की सुन्दर प्रतिमायें है।

सोमनाथ का मन्दिर उत्कृष्टता में बेलूर के चन्ना केशव मन्दिर और हेलेविड के मन्दिर के समकक्ष है। 1268 ई. के बने इस मन्दिर के स्तम्भ, छत, दीवारे सभी का शिल्प उत्कृष्ट है। मन्दिर का पूर्वी द्वार 16 गोल खम्भों पर आधारित है।

इस द्वार मण्डप के दाहिनी तरफ एक ध्वज स्तम्भ है। यह मन्दिर 218 फीट लम्बे और 177 फीट चौडे प्रांगण के अन्दर स्थित है। एक 3 फीट ऊंचे तथा 16 कोणीय सितारे की आकृति वाले चबूतरे पर स्थित है। मन्दिर की भित्तियों पर अद्भूत नक्काशी की गई है। ये नक्काशी सोने की नक्काशी से भी सुन्दर है। आधार की भिति पर हाथियों घुडसवारों आदि व रामायण तथ महाभारत काल की चित्र वल्लरी की नक्काशी है। मध्य भित्ति में भगवान के विभिन्न स्वरूप अंकित है। ऊपरी भित्ति पर बडी मूर्तियां हैं। कुल 195 मूर्तियों में से अधिकांश भगवान विष्णु की हैं। कुछ शिव के हैं। ये मूर्तियां 2–3 फीट ऊंची हैं। मूर्तियां मुख्य देवी या देवता की, पति पत्नी एवं परिचारिकाओं के साथ बनी है। मूर्तियों पर किया गया कार्य इतना उत्कृष्ट है कि मूर्तिया सजीव लगती हैं। मूर्तियों के भावों की सजीवता देखते ही बनती है। मन्दिर के प्रवेश द्वार के ठीक सामने गर्भ गृह है जिसमें केशव की प्रतिमा थी जो अब अप्राप्य है। इसके साथ उतरी गर्भगृह में भगवान जनार्दन की 6 फीट ऊची प्रतिमा है। दक्षिणी गर्भगृह में गरूड पर स्थित विष्णु की साढे चार फीट ऊंची प्रतिमा है। दोनों मूर्तियों के प्रभामण्डल पर भगवान विष्णु के दसो अवतारों की प्रतिमायें अलंकृत है।

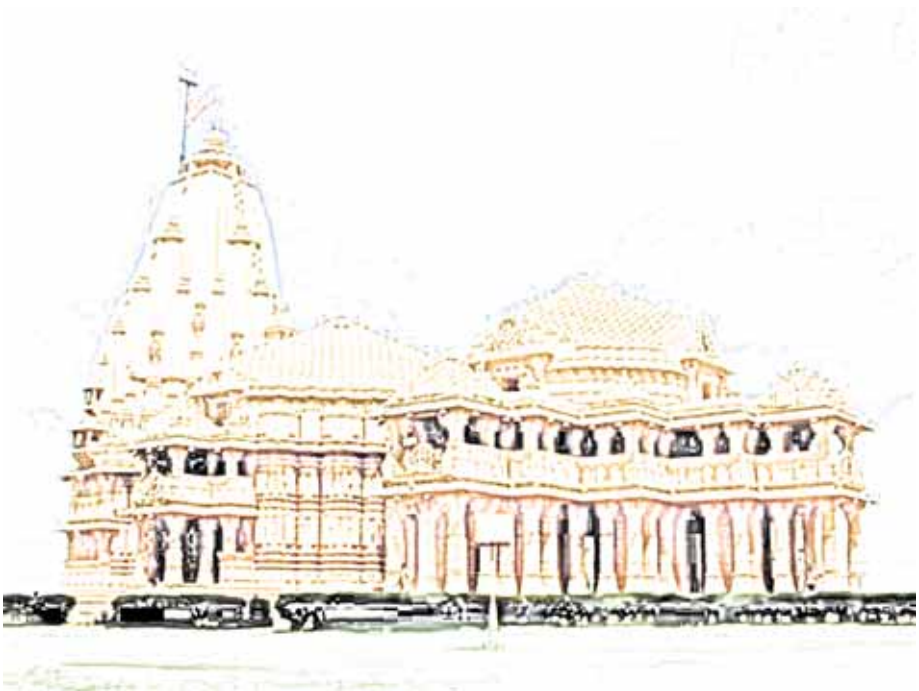

मन्दिर को स्तम्भ हाल का शिल्प अत्यन्त उच्च कोटि का है और वास्तुकला की दृष्टि से अनुपम पूरा मन्दिर सोप स्टोन का बना है।

नजनगुडः– सोमनाथपुर के पास ही स्थित नजनगृह को मन्दिरों का नगर कहते है। यहां सैकड़ों मन्दिर हैं।